हिन्दू चेतना

(पाक्षिक)

E-mail:hinduchetna.patrika@gmail.com

युगाब्द 5113 | हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत्। मम दीक्षा हिन्दुरक्षा मम मंत्रः समानता।। | 2068 वि.सं.

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
समस्त-वेदार्थ-सारसंग्रहभूत-गीताशास्त्र'	3
दिन दर्शिका	4
सम्पादक के नाम	4
विहिप की प्रन्यासी मण्डल तथा प्रबन्ध समिति की बैठक	5
गीता पर प्रतिबंध से नेदरलैंड में बसे क्षुब्ध हिंदूओं द्वारा रुसी शासन को सदबुद्धि के लिए 24 दिसम्बर 2011 को हनुमान चालीसा का पाठ	8
साम्प्रदायिक एवं लक्षित हिंसा अधिनियम-2011 के विरुद्ध देशव्यापी आंदोलन एवं एन.ए.सी. भंग करने की मांग	9
गुरु गोबिन्द सिंह का मानवतावाद	10
स्वामी विवेकानंद चिन्तन शिविर, श्री क्षेत्र आळंदी	12
मुझे निर्वस्त्र करके उल्टा टांगा	13
सप्तर्षि मंडल के महर्षि : स्वामी विवेकानन्द	15
सफल जीवन निर्माण हेतु माया में न डूबें	17
बजरंग दल का त्रिशूल दीक्षा एंव गौरक्षा सम्मेलन	19
मंदिर का पुनर्निर्माण हो	20
गांधी हत्या हिन्दू महासभा के कार्यकर्ताओं ने की थी संघ ने नही	20
यात्रा का मुहूर्त एंव दिनांक बोर्ड नहीं तय करेगा	21
ईसाई धर्म का बोलबाला	22
विशाल भजन मण्डली एवं सत्संग	23
भारत की भांति पाक में हिन्दुओं के रहने का अधिकार हो	24
मन्दिर एवं उनकी सम्पत्ति का अधिग्रहण	25

'समस्त-वेदार्थ-सारसंग्रहभूत-गीताशास्त्र'

आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य तो गीता को **'समस्त-वेदार्थ-सारसंग्रहभूत-गीताशास्त्र'** कहा है। वे इसे स्मृति भी कहते हैं। शास्त्र और स्मृतियों का उद्देश्य मनुष्यमात्र को किसी विषय का साकल्यज्ञान तथा उसके कर्त्तव्यों का बोध कराना होता है। गीता में इन दोनों ही बातों का समावेश है और इस समस्त शास्त्र, स्मृति को श्रवण कर अर्जुन का मोह नष्ट हो गया। श्रीकृष्ण ने अपने उपदेश की सफलता जानने के लिये अर्जुन से अन्त में पूछा भी है, हे पार्थ! क्या यह सब उपदेश तुमने एकाग्रचित्त होकर सुना? क्या तुम्हारा अज्ञानजनित मोह नष्ट हो गया?

तब अर्जुन ने अत्यन्त आश्वस्त होकर कहा कि-हे अच्युत! आपके उपदेश प्रसाद से मेरा मोह नष्ट हो गया, मुझे अपने कर्त्तव्य बोध की स्मृति हो गयी। अब तो जो आपने कहा है कि तुम अपने कर्त्तव्य का स्मरण करते हुए युद्ध करने के लिये खड़े हो जाओ; मैं अब सन्देह मुक्त होकर उसके लिए खड़ा हूँ और आपके वचन का पालन करूँगा।

अन्त में सञ्जय धृतराष्ट्र से कहता है कि हे राजन् धृतराष्ट्र! मैंने साक्षात् स्वयं कथन करते हुए योगेश्वर श्रीकृष्ण के मुख से परम रहस्यमय योग को व्यास जी की कृपा से सुना है। महाराज धृतराष्ट्र! कृष्ण और अर्जुन के इस पुण्य तथा अद्भुत संवाद का स्मरण कर बारम्बार मैं प्रफुल्लित हो उठता हूँ-

व्यासप्रसादात् श्रुतवानेतद् गुह्यमहं परम्।
योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम्।।
राजन् संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिमद्भुतम्।
केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः।। गीता 18/75-76

-साभार पावमानी

माघ कृष्ण पक्ष विक्रम संवत् २०६८
१० जनवरी से २३ जनवरी सन् २०१२ ई.

सूर्य दक्षिणायण　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　शरद ऋतु

दिन	तिथि	नक्षत्र	प्रविष्टि सौर मास	दिनांक आंग्लमास	विशेष विवरण
मंगलवार	प्रतिपदा	पुष्य	२६	10	
बुधवार	द्वितीया	श्लेषा	२७	11	लाल बहादुर शास्त्री
गुरुवार	तृतीया	मघा	२८	12	कृष्ण चतुर्थी व्रत
शुक्रवार	चतुर्थी	पूर्वाफाल्गुनि	२९	13	लोहिड़ी
शनिवार	पंचमी	उत्तरा फाल्गुनी	१ माघ	14	मकर संक्रान्ति
शनिवार	षष्ठी	00	००	00	क्षय
रविवार	सप्तमी	हस्त	२	15	स्वामी विवेकानन्द एवं स्वामी रामनन्दाचार्य जयंती
सोमवार	अष्टमी	चित्रा	३	16	कालाष्टमी
मंगलवार	नवमी	स्वाति	४	17	
बुधवार	दशमी	विशाखा	५	18	
गुरुवार	एकादशी	अनुराधा	६	19	षट्तिला एकादशी व्रत
शुक्रवार	द्वादशी	ज्येष्ठा	७	20	प्रदोष व्रत
शनिवार	त्रयोदशी	मूल	८	21	मेरू त्रयोदशी, मास शिवरात्रि
रविवार	चतुर्दशी	पूर्वाषाढ़	९	22	माघ बिहु (असम)
सोमवार	अमावस्या	उत्तराषाढ़	१०	23	मौनी अमावस्या, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती

सम्पादक के नाम

आज समाचार पत्र में पढ़ा कि पाकिस्तान से प्रताड़ित होकर भारत में शरण लेने आए मात्र 27 हिन्दू परिवारो को शरण देने कि बात दूर वीजा देने से मना कर दिया।

हमारी राष्ट्रवादी संस्था भारत सरकार के इस निर्णय को अनैतिक, क्रूर और अन्यायपूर्ण मानती है।

हमारी संस्था माननीय गृह राज्य मंत्री श्री मुल्लापल्ली रामचन्द्र जी से यह पूछना चाहती है कि आज घुसपैठ करके जो लगभग 40 मिलियन बांग्लादेशी मुसलमान भारत के विभिन्न क्षेत्रों पश्चिमी बंगाल, बिहार, आसाम, दिल्ली, गाजियाबाद मुम्बई आदि क्षेत्रों में रह रहे हैं और इन क्षेत्रों में आपराधिक तथा आतंकी कार्यों में लिप्त हैं। उनके लिए राशन कार्ड, ड्राईविंग लाइसेंस और वोटर कार्ड तक किसने और क्यों बनवाएँ फिर 27 हिन्दू परिवारों का क्या दोष है? क्या यह है कि ये लोग भारतभक्त हिन्दू हैं। हमारी संस्था प्रधानमंत्री जी तथा गृहमंत्री जी से अनुरोध करती है कि पाकिस्तान से पिड़ित दुखी और हताश होकर आये इन 27 हिन्दू परिवारों को भारत में रहने की अनुमति दी जाए।

–डॉ. हरपाल सिंह

अध्यक्ष

हिन्द जागृति सभा

विहिप की प्रन्यासी मण्डल तथा प्रबन्ध समिति की बैठक

कोच्ची हिन्दू सांस्कारिक केन्द्र, पावाकुलम् मन्दिर में 16,17,18 दिसम्बर को प्रन्यासी मण्डल तथा प्रबन्ध समिति की बैठक अनुष्ठित हुई। स्वागताध्यक्ष निवर्तमान न्यायाधीश श्री रामचन्द्रन्, श्री अशोक जी सिंहल, श्री वेदान्तम्, डा. प्रवीणभाई तोगड़िया, संगठन महामंत्री श्री दिनेश चन्द्र जी आदि ने दीप प्रज्जवलन कर बैठक प्रारम्भ होने की सूचना की। स्वागत आदि के पश्चात् सर्व प्रथम शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

प्रस्ताव

हिन्दुओं का अधिकार एवं रोजगार छीनने के षड्यंत्र को बर्दाशत नहीं करेंगे। हम किसी भी हिन्दू-ओबीसी, अनुसूचित जाति, जनजाति या ओपन केटोगिरी- की एक भी नौकरी या अधिकार मुसलमान, ईसाई को नहीं देने देंगे।

ओ0बी0सी0 आरक्षण में से मुसलमानों को एक भी रोजगार नहीं देने देंगे मुस्लिम आरक्षण संविधान के विरूद्ध है। मजहब के आधार पर आरक्षण देश तोड़ने का षडयंत्र है।

विश्व हिन्दू परिषद का वैश्विक प्रन्यासी मंडल एवं प्रबंध समिति सर्वसम्मति से, यूपीए सरकार द्वारा सच्चर कमेटी की सिफारिशों की आड़ में, मजहब के आधार पर हिन्दू समाज की पिछड़ी जाति (OBC) के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण भाग में से 6 प्रतिशत तथा अनुसूचित जाति के लिए निर्धारित आरक्षण भाग में से भी कुछ भाग मुस्लिम समाज को देने का पुरजोर विरोध करती है।

मजहब आधारित आरक्षण भारतीय संविधान के विरूद्ध, भारत की एकता अखण्डता के लिए खतरा तथा देश में अलगाववाद की भावना जागृत करने वाला है। इसके क्रियान्वयन से देश के पुन: विभाजन का भी खतरा है। इसलिए प्रन्यासी मण्डल एवं प्रबंध समिति का यह अधिवेशन इस आरक्षण का प्रबल विरोध करता है।

मुस्लिमों की पिछड़ी जातियों को पहले से ही हिन्दू पिछड़ा वर्ग (OBC) कोटे में आरक्षण प्राप्त है। मुस्लिम शिक्षा संस्थानों को सरकारी अनुदान भी मिलता है फिर भी ऐसे संस्थानों में हिन्दू SC/OBC युवकों के लिए आरक्षण का प्रावधान समाप्त कर दिया गया है। मुस्लिम एवं ईसाइयों के विकास के बहाने उनके तृष्टिकरण के लिये तीन-तीन आयोग बनाये गये हैं, फिर भी एक और आरक्षण देने की सिफारिश केवल वोट बैंक की राजनीति ही है अत: संविधान की मूल भावना के विपरीत है।

संविधान सभा में परिचर्चा के दौरान डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर, पं. जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल तथा श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी सहित सभी वरिष्ठ नेताओं ने मजहब आधारित आरक्षण की मांग का सर्वसम्मति से विरोध किया था, इतना ही नहीं प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने 27 जून, 1961 को देश के सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को एक पत्र लिखकर ''मजहब आधारित आरक्षण'' को नकार दिया था।

पिछड़ा वर्ग आरक्षण कोटे से मुसलमानों को आरक्षण देने से सम्पूर्ण हिन्दू समाज को भयंकर परिणाम भोगने पडेंगे जैसे कि -

- पिछड़ी जाति के कमजोर लोगों को बहुत भारी आर्थिक, राजनैतिक और शैक्षणिक हानि होगी।
- भविष्य में आबादी के अनुपात में मुस्लिमों और ईसाइयों के लिए आरक्षण की मांग उठाई जायेगी, जो देश को विभाजन के कगार पर खड़ा कर देगी।
- मजहबी उन्माद, वर्ग संघर्ष एवं दंगा आदि की घटनाएं बढ़ेगी।
- पिछड़ी जाति के आर्थिक अनुदानों में से मुस्लिमों की हिस्सेदारी हो जाने के कारण पिछड़ा वर्ग और अधिक कंगाल एवं बेरोजगार हो जायेगा।
- आर्थिक क्षेत्रा में पिछड़े वर्ग की वर्तमान भागीदारी व्यवस्था और उद्योग व्यापार में पिछड़े वर्ग को मिलने वाली सहायता मुस्लिमों में बटेगी।
- अन्तरराष्ट्रीय मुस्लिम लाबी एवं ईसाई लाबी द्वारा भारत के हिन्दू युवकों को अपने-अपने मजहब में धर्मान्तरित करके अपनी जनसंख्या बढ़ाकर भारत को अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद का युद्धक्षेत्र बनाए जाने की संभावना बढ़ेगी और धार्मान्तरण को बढ़ावा मिलेगा।

यह उपवेशन महामहिम राष्ट्रपति महोदया जी से पुरजोर शब्दों में यह कहना चाहता है कि मुस्लिम मजहब में जाति व्यवस्था मान्य नहीं है तो फिर मजहबी जातीय आरक्षण नहीं मिलना चाहिए। महामहिम से अनुरोध है कि आप व्यापक राष्ट्रीय सामाजिक, संवैधानिक हितों को ध्यान में रखकर इसमें हस्तक्षेप करके वर्तमान यू.पी.ए. सरकार को संविधान एवं उच्चतम न्यायालय के निर्णय के अनुसार मजहबी आरक्षण को निरस्त करने के लिये निर्देश दें।

आज ओबीसी का आरक्षण छीना जा रहा है, भविष्य में अनुसूचित जाति का आरक्षण छीनकर मुस्लिम व ईसाई को दिया जायेगा। अनुसूचित जनजाति का आरक्षण ईसाई को दे दिया गया है अब भारत के संविधान में संशोधन करके मजहब के आधार पर मैरिट के हिन्दुओं का रोजगार छीनकर मुस्लिम व ईसाइयों को देने का षड्यंत्र की योजना है।

हमारी मांग है कि -

01. जस्टिस रंगनाथ मिश्र आयोग एवं सच्चर कमेटी की सिफारिशें जो सामाजिक सौहार्द को नष्ट करने वाली एवं अलगाववाद को बढ़ाने वाली है तत्काल प्रभाव से रद्द कर दी जाय।
02. तमिलनाडु, केरल, आन्ध्र प्रदेश आदि प्रान्तों में मुस्लिम समाज की गरीबी का बहाना बताकर वोट बैंक की घृणित नीति के अनुसार जो आरक्षण दिया गया है उसको भी रद्द किया जाए।
03. ओबीसी के 27 प्रतिशत आरक्षण में से मुसलमानों को अलग 6 प्रतिशत आरक्षण न दिया जाय।
04. इस्लाम में जाति नहीं है तो आज 27 प्रतिशत ओबीसी के आरक्षण में मुसलमानों की जिस जातियां सम्मिलित है उनको भी हटाया जाय।
05. अनुसूचित जाति के आरक्षण से मुस्लिम व ईसाइयों को आरक्षण न दिया जाय।
06. अनुसूचित जनजाति के आरक्षण से ईसाइयों को हटाया जाय।
07. भारतीय संविधान ने मजहब के आधार पर आरक्षण को अस्वीकार किया है तो मजहब के आधार पर आरक्षण की सिफारिश एवं मांग करने वाले के विरूद्ध देशद्रोह का मुकदमा चलाया जाय।

यह उपवेशन हिन्दू समाज का आह्वान करता है कि हिन्दू समाज में जन्मी अनुसूचित जाति, जनजाति, ओबीसी सभी मिलकर समस्त हिन्दू समाज की रोजी-रोटी छीनने वाली मुस्लिम/ईसाई वोट बैंक आधारित राजनीति को परास्त करें।

राष्ट्र की एकता अखण्डता में विश्वास रखने वाले सभी राजनीतिक दलों, सामाजिक संस्थाओं से विश्व हिन्दू परिषद का प्रन्यासी मण्डल अनुरोध करता है कि वे दलगत राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में संगठित होकर इस सिफारिश को लागू किये जाने का पुरजोर विरोध कर आन्दोलन में सक्रिय सहभागी बने।

प्रस्तावक : देवेश कुमार उपाध्याय
अनुमोदक : दिलीपभाई

साम्प्रदायिक एवं लक्षित हिंसा रोकथाम विधेयक-२०११ वापस लो, और देश से क्षमा मांगो।

विश्व हिन्दू परिषद की प्रन्यासी मंडल एवं प्रबंध समिति की बैठक में उपस्थित हम सब प्रतिनिधि सर्वसम्मति से दिल्ली स्थित ज्वालामुखी मंदिर में कांची कामकोटि पीठ के पूज्य शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती जी की अध्यक्षता में आयोजित देशभर के सनातनी, जैन, बौद्ध, सिख एवं सभी पूज्य धर्माचार्यों के सम्मेलन में लिये गये निर्णय को शिरोधार्य करते हैं कि यह कानून देश को तोड़ने वाला, असंवैधानिक, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि को बांटने वाला, देश के हिन्दुओं को गुनहगार मानकर विश्व में सहिष्णु हिन्दू संस्कृति को बदनाम करने वाला, दंगाई, जेहादी, व्यवहार को प्रोत्साहित एवं हिंसा करने के बाद संरक्षण देने वाला है। देश के प्रशासन के ऊपर कानून के द्वारा नई असंवैधानिक व्यवस्था खड़ी करने वाला है। इसलिये इस प्रस्तावित बिल को तत्काल वापस लिया जाये।

- ऐसे कानून का प्रस्ताव करने के लिए उत्तरदायी व्यक्ति, देश एवं हिन्दू जनता से क्षमा मांगे।
- ऐसा कानून बनाने वाली नेशनल एडवाइजरी कमेटी को तत्काल भंग किया जाय।
- इस कानून से देश के मंदिर, संत, रामलीला, गणेशोत्सव तथा हिन्दुओं के अन्य धार्मिक कार्यक्रम व सामाजिक

धार्मिक संस्थाऐं, हिन्दुओं के व्यापार, जेहादियों के दया पर निर्भर हो जायेंगे।

- विश्व हिन्दू परिषद का प्रन्यासी मण्डल देश के सभी संत, सभी सामाजिक धार्मिक बिरादरी की संस्थाओं का आह्वान करता है कि देशव्यापी जनजागरण और प्रबल जनआन्दोलन करने के लिए तैयार रहें।
- देश के हर कोने में जनजागरण एवं आन्दोलन हो और दिल्ली में भी प्रचण्ड प्रदर्शन की तैयारी करें।
- विश्व हिन्दू परिषद का प्रन्यासी मण्डल यह संकल्प व्यक्त करता है कि किसी भी कीमत पर इस हिन्दू विरोधी एवं गैरकानूनी प्रस्तावित विधेयक को कानून नहीं बनने देंगे और इसके लिये देश की जनता सर्वोच्च बलिदान के लिये तैयार रहे।

प्रस्तावकः- व्यंकटेश आबदेव-मुम्बई

अनुमोदक :- नरपत सिंह शेखावत-जयपुर

भारत के विरुद्ध चीनी आक्रमकता को पराजित करो

विश्व हिन्दू परिषद के प्रन्यासी मण्डल की बैठक में उपस्थित हम सब प्रतिनिधि सर्वसम्मति से भारत की सार्वभौम सम्प्रभुता के विरुद्ध चीन द्वारा किये जा रहे आक्रामक कार्यवाईयों की निंदा करते हैं। भारत ही नहीं बल्कि दक्षिण, दक्षिण-पूर्व एवं पूर्व एशिआई देशों के लिये संकट उत्पन्न हो गया है। चीन को यदि रोका नहीं गया तो सम्पूर्ण एशिया में संघर्ष छिड़ सकता है।

चीन निम्नलिखित बिन्दुओं पर दोषी सिद्ध होता है

भारत की सम्प्रभुता का बार-बार उलंघन कर नियंत्रण रेखा, भारत-तिब्बत सीमा, लद्दाख क्षेत्र व भारत के अभिन्न अंग अरुणाचल प्रदेश में चीनी सेना का निरन्तर अतिक्रमण करना।

- भारत के अभिन्न अंग अरुणाचल प्रदेश के संबंध में चीन द्वारा गलत दावेदारी करना।
- चीन द्वारा 1962 के युद्ध में जबरन हथियायी गई भारत की 38,000 वर्ग कि.मी. भूमि को खाली करने से इंकार करना।
- भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में अलगाववादी गतिविधियों का अवैधानिक रूप से समर्थन करना।
- नेपाल को अपने चंगुल में लेने वाले माओवादियों के हिन्दू विरोधी व भारत विरोधी गतिविधियों का समर्थन करना।
- आतंकवादी देश पाकिस्तान के हिन्दू विरोधी व भारत विरोधी अनेकों कार्यों तथा पाकिस्तान के दक्षिण पूर्व एशिया में हिन्दू विरोधी कार्यों का समर्थन करना।
- भारत विरोध के लक्ष्य को लेकर पाकिस्तान द्वारा चलाये जा रहे परमाणु बम व प्रक्षेपास्त्रों के निर्माण कार्य को लगातार समर्थन करना।
- हिन्द महासागर में भारत को घेरने के लिये श्रीलंका एवं पाकिस्तान के तटीय क्षेत्रें में बन्दरगाहों का निर्माण कर अपनी सैनिक शक्ति का विस्तार एवं प्रभाव बढ़ाना।
- भारतीय अर्थ व्यवस्था को नुकसान पहुंचाने के लिये निम्न स्तरीय वस्तुओं से भारतीय बाजारों को भर देना।
- ब्रह्मपुत्र नदी के ऊपर तिब्बत में बांध बनाना तथा हिमालयी नदियों के जल के बहाव को चीन की ओर मोड़ना।
- भारत सरकार के संवेदनशील सुरक्षा संस्थानों में लगे कम्प्यूटरों के ऊपर अपने आक्रमण (Cyber Warfare) के द्वारा नुकसान पहुंचाना।

दुराग्रही चीन द्वारा उत्पा समस्याओं से निपटने के लिये विश्व हिन्दू परिषद का प्रन्यासी मंडल भारत सरकार द्वारा निम्नलिखित कदम उठाने की मांग करता है-

1. भारत सरकार कठोरता पूर्वक चीन को यह बताये कि भारत की सार्वभौम सीमाओं का उल्लंघन बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।
2. 1962 में संसद के सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव का सम्मान करते हुये भारत सरकार शीघ्र चीन द्वारा हथियाये गये भू-भाग को पुनः वापस लेने का प्रभावी प्रयत्न करे।
3. चीनी वस्तुओं के भारत में आयात रोकने हेतु चीनी वस्तुओं पर कठोर कर एवं सीमा शुल्क लगाये।
4. हिन्द महासागर में चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिये भारत सरकार नौसेना, वायुसेना व थलसेना की शक्ति वृद्धि के साथ-साथ कूटनीतिक प्रयास तेज करने चाहिये।
5. नेपाल में भारत समर्थक ताकतों को मजबूत करे तथा चीन समर्थित मावोवादियों का विरोध करे।

6. चीन द्वारा आतंकवादी देश पाकिस्तान एवं इस क्षेत्र में नुकसान देने वाली अन्य ताकतों का समर्थन देने के लिये अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उसे अलग-थलग एवं बेनकाब करे।
7. चीन सरकार की खतरनाक गतिविधियों के प्रतिकार के लिए सुरक्षा व गुप्तचर व्यवस्था को मजबूत करे।
8. तिब्बत में ब्रह्मपुत्र नदी पर बांध बांधने तथा अन्य हिमालयी नदियों के जल के प्रवाह को मोड़ने से रोके।
9. चीन समर्थक बुद्धिजीवी गुटों के आर्थिक तंत्र की छानबीन करे।

इसके अतिरिक्त विश्व हिन्दू परिषद का प्रन्यासी मंडल चीन के द्वारा उत्पन्न किए जाने वाले खतरों के प्रतिकार हेतु सभी देश भक्त नागरिकों से आह्वान करती है कि निम्नलिखित कार्य करें।

1. व्यवसायी तथा आयातकर्ता बन्धु चीन के निम्नस्तरीय वस्तुओं का व्यापार नहीं करें।
2. भारतीय उपभोक्ता चीनी वस्तुओं का बहिष्कार करे तथा अपनी असीमित क्रय शक्ति का प्रयोग भारतीय उत्पादकों को खरीदने में करें।
3. भारत के देशभक्त नागरिक अपना विरोध प्रदर्शित करने के लिए स्वतंत्रता आंदोलन में अंग्रेजी सामानों के बहिष्कार एवं होलिका दहन की तरह चीनी वस्तुओं का न केवल बहिष्कार करें बल्कि दहन भी करें एवं राजनीतिक एवं सरकारी अधिकारियों को चीन समर्थक नीतियों के लिए उत्तरदायी ठहराएं।

गीता पर प्रतिबंध से नेदरलैंड में बसे क्षुब्ध हिंदूओं द्वारा रुसी शासन को सदबुद्धि के लिए 24 दिसम्बर 2011 को हनुमान चालीसा का पाठ

अम्स्तेर्दम । रूस में हिन्दू के धार्मिक ग्रंथ भगवद् गीता पर पाबंदी लगाने के हाल के प्रयासों को लेकर निदरलैंड में बसे हिंदू समुदाय के लोग बेहद क्षुब्ध और आक्रोशित हैं।

STICHTING
Shri Sanatan Dharma
NEDERLAND

अम्स्तेर्दम स्थित संस्था श्री सनातन धमं। हिन्दू संगम के लोगों ने कहा कि रूसी अभियोजकों की यह कार्यवाही दमनकारी तथा घृणित है यह समर्थन योग्य नही है। यह रूस में हिंदुओं की धार्मिक स्वतंत्रता पर कठोरता से प्रतिबंध लगाने के प्रयासों को दर्शाती है।

उन्होंने कहा कि एक पवित्र ग्रंथ के बारे में एक संकीर्ण एजेंडा से दुनिया भर में एक अरब से ज्यादा हिंदुओं की भावनाओं पर चोट पहुंची है। रूसी अधिकारी एक स्वतंत्र समाज के सिद्धांतों के विपरीत काम कर रहे हैं।

हिन्दू संगम के सदस्यों ने औपचारिक तौर पर अपनी चिंताओं से डी हेग में रूसी दूतावास के अधि कारियों को अवगत कराया और आगे इसके निदान के लिए बैठक का आग्रह किया।

अम्स्तेर्दम स्थित हिन्दू संगम की मंत्री मार्ग वन बर्कल ने कहा कि हमने रूसी न्यायपालिका और वहां की सरकार से हिंदू नागरिकों के मूलभूत अधिकारों को बरकरार रखने का आग्रह किया है। उन्होंने कहा कि भगवद गीता पर प्रतिबंध लगाने के बारे में अदालत के किसी भी आदेश अथवा कानून को रूस में बसे हिंदू समुदाय की नागरिक छूट पर सीधा हमला तथा दुनिया भर में फैले हिंदुओं का अपमान माना जाएगा।

रुसी अदालत, शासन को तथा अभियोजकों को सद्बुद्धी मिले इसके लिए अम्स्तेर्दम स्थित श्री सीताराम धााम मंदिर में 24 दिसम्बर 2011 को हनुमान चालीसा का आयोजन भी किया गया।

साम्प्रदायिक एवं लक्षित हिंसा अधिनियम-2011 के विरुद्ध देशव्यापी आंदोलन एवं एन.ए.सी. भंग करने की मांग

नई दिल्ली। भारतीय संस्कृति सभा के तत्वावधान में ज्वालामुखी मंदिर रामकृष्णपुरम् में आयोजित दो दिवसीय 'अखिल भारतीय शीर्ष संत समागम' में एक स्वर से "साम्प्रदायिक एवं लक्षित हिंसा विधेयक - 2011" का विरोध करते हुए राष्ट्रीय सलाहकार परिषद (एन.ए.सी.) को तत्काल भंग किये जाने की मांग की।

समागम में पारित प्रस्ताव में विधेयक को देश को तोड़ने वाला, असंवैधानिक, हिंदू एवं मुस्लिमों को बांटने वाला, देश के हिंदुओं को गुनहगार मानकर विश्व में सहिष्णु हिंदु संस्कृति को बदनाम करने वाला, दंगाई, जेहादी, व्यवहार को प्रोत्साहन एवं हिंसा करने के बाद संरक्षण देने वाला, देश के प्रशासन के ऊपर इस कानून के द्वारा नई असंवैधानिक व्यवस्था खड़ी करने वाला बताया गया।

इस दौरान विशेष रूप से आमंत्रित किये गये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहनराव भागवत ने कहा कि विश्व में धर्म की एकमात्र शक्ति भारत बची है जो अन्य मजहबों के लोगों को अपने मार्ग का रोड़ा लगता है उनकी मंशा पूरी हो सके इसके लिए वे भारत को तोड़ने में लगे हुए हैं।

उन्होंने कहा कि यह विधेयक देखने से ही पता लगता है कि यह अन्याय को न्याय बनाने वाला, प्रशासन को पंगु बनाने वाला और पंचमहापातक को नियम बनाने वाला विधेयक है। संत समाज के विरोध के कारण वे विधेयक में कुछ परिवर्तन की बात करने लगे हैं किंतु यह ऐसा ही है मानो ताड़का को पूतना के रूप में प्रस्तुत किया जाए।

श्री मोहन भागवत ने उपस्थित संत समुदाय से अपील की कि इस विधेयक को खारिज करवाने के लिए बड़ा शक्ति प्रदर्शन करना होगा जिसके लिए पूरी तैयारी रखनी है। इसके लिए आवश्यक जनजागरण की विस्तृत योजना संत समाज तय करे जिसमें संघ पूरी तरह सहभागी होगा।

कार्यक्रम के उपरांत संवाददाताओं से बातचीत करते हुए विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिंहल ने कहा कि परिषद इस विधेयक सहित देश में तुष्टीकरण के प्रत्येक प्रयास का कड़ा विरोध करेगी।

उन्होंने कांग्रेस महासचिव दिग्विजय सिंह के नेतृत्व में प्रधानमंत्री से मिलने गये 25 कांग्रेसी सांसदों के प्रतिनिधि मंडल द्वारा 12वीं पंचवर्षीय योजना में मुस्लिम समुदाय के लिए 15 प्रतिशत बजट आवंटन का विशेष प्रावधान किये जाने को तुष्टीकरण की पराकाष्ठा करार दिया।

प्रस्ताव में कहा गया है, "इस विधेयक से देश के मंदिर, संत, रामलीला, गणेशोत्सव तथा हिंदुओं के अन्य धार्मिक कार्यक्रम, हिंदुओं की सामाजिक धार्मिक संस्थाएं, हिंदुओं के व्यापार, जेहादियों के दया पर निर्भर हो जायेंगे। संतों की यह सभा देश के सभी संत, सभी सामाजिक-धार्मिक बिरादरी की संस्थाओं का आह्वान करती है कि इस विधेयक के खिलाफ देशव्यापी जनजागरण एवं आंदोलन हो और दिल्ली में भी प्रदर्शन की तैयारी हो।"

समागम में संतों ने संकल्प व्यक्त किया और कहा कि इस विधेयक को किसी भी कीमत पर कानून का रूप नहीं लेने देंगे। इसके लिए देश की जनता किसी भी प्रकार के बलिदान के लिए तैयार है। संतों के इस प्रस्ताव को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद सहित देश के लगभग सभी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक संगठनों ने अपना खुला समर्थन व्यक्त किया।

प्रेषक:- **अनिल अग्रवाल,**
विश्व संवाद केंद्र

गुरु गोबिन्द सिंह का मानवतावाद

-प्रो. लाल मोहर उपाध्याय

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि पटना सिटी (पटना साहिब)। में जिस जगह श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज का आज से 344 वर्ष पहले प्रकाश (जन्म) हुआ था उसके एक तरफ मस्जिद था तो दूसरी तरफ मन्दिर भी था। स्वाभाविक है कि गुरुजी की कानों में संगत द्वारा गुरुवाणी कीर्तन के साथ-साथ मन्दिर से आ रही घंटियों की आवाज तथा मस्जिद से आ रहे अजान की आवाज भी पड़ी होगी। यह एक दैवी संयोग ही था। इसलिए तो श्री गुरु गोबिन्द सिंह महाराज ने जीवन का मूल मंत्र दिया-

हिन्दू तुरक कोउ राफजी इमामसाफी,
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो

इनका ही नहीं करीम और रहीम में एक ही ज्योति का दर्शन करने की प्रेरणा देते हुए उन्होंने डंके की चोट पर कहा कि सम्पूर्ण विश्व का गुरु एक ही ब्रह्मा है।:-

करता करीम सोई राजक रहीम ओई,
दूसरों न भेद कोई भूल भरम मानवो।
एक ही की सेव, सभही को गुरुदेव एक,
एक ही स्वरूप सबै, ज्योति जानवो।

सच तो यह है कि अल्लाह एवं राम तथा कुरान एवं पुरान में तत्वत: कोई भेद नहीं है।

अलह अभेखु सोई पुरान और कुरान ओई,
एक ही सरूप सबै एक ही बनाउ है।
देहुरा मसीत सोई पूजा औ निवास ओई,
मानस सभै एक पै अनेक को भ्रमाउ है।
देवता अदेव जच्छ गंर्धव तुरक हिन्दू,
न्यारे-न्यारे देशन को भेसन को प्रभाउ है।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह की महाराज ने पथ-भ्रष्ट जनता को सही मार्ग दिखाने के लिए धर्म, जाति, देश-भाषा के कारण उत्पन्न विभिन्नता समाप्त कर भावनात्मक एकता स्थापित करने से उद्देश्य से यह समझाया कि मन्दिर-मस्जिद, पूजा-नमाज, देव-गन्धर्व, हिन्दू-मुसलमान में मूलत: कोई भेद नहीं है। यह केवल बाहरी दिखावा है। इतना ही नहीं आत्मा भी परमात्मा का ही अंश है :-

जैसे ऐ आग से कनूका कोई आग उठै,
न्यारे-न्यारे हुइके फिर आग में मिलाहिगे।
जैसे एक पूर से अनेक पूर पूरत है,
पूर के कान को फिर धूर ही समाहिगे।
जैसे एक नद से तरंग कोटि उपजत है,
पान के तरंग सभै पानि ही समाहिगे।
जैसे विश्व रूप से अभूत भूत प्रकट हुई,
ताहिते उपज सबै ताहि समाहिंगे।

इसलिए तो श्री गुरुगोबिन्द सिंह जी ने समय की मांग के अनुसार बैसाखी 1699 के दिन आनन्दपुर साहिब, (पंजाब) में खालसा पंथ का सृजन कर अछूत एवं दलित वर्ग के स्वाभिमान को बढ़वाया और अपने चमत्कारी व्यक्तित्व के प्रभाव से चिर शोषित और चिर उपेक्षित जन साधारण को राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन का दुर्जेय योद्धा बनाकर दिखला दिया कि मनुष्य जाति एक है- इसमें कोई भेद नहीं समझना चाहिए।

उन्होंने खालसा पंथ की सृजना करते वक्त जाति-पाँति एवं प्रदेश का भेद मिटाकर नये नाम रखे जो इस प्रकार है:- 1. भाई दयाराम (खत्री, लाहौर) का नाम हो गया भाई दया सिंह, 2. भाई धर्मचन्द (जाट, दिल्ली) का नाम हो गया भाई धर्म सिंह, 3. भाई मुहकमनन्द (धोबी द्वारका) का नाम हो गया भाई मुहकम सिंह 4. भाई साहबचन्द (नाई, बिदर) का नाम हो गया भाई साहिब सिंह। 5. भाई हिम्मत सिंह राम (कहार, उड़ीसा) का नाम हो गया भाई हिम्मत सिंह। गुरु गोबिन्द राय जी हो गये गुरु गोबिन्द सिंह जी।

इस तरह उन्होंने विश्व के समक्ष लोकतंत्र और समाजवाद का एक अद्यतन दृश्य उपस्थित किया। इसमे दो मत नहीं कि जाति-पाति एवं छूआ-छूत का रोग समाज की शक्ति को घुन के कीड़े की तरह खाता जा रहा था। ऐसी विषम परिस्थिति में श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने अकेले ही युग की चुनौती को स्वीकार किया और अपने असीम साहस, दृढ़ संकल्प और आश्चर्यजनक प्रतिभा से समाज की प्रलय धारा को मोड़ दिया। उन्होंने संगत (सहचिंतन) पंगत (सहभोजन-लंगर)

की अनुपम रीति को आगे बढ़ाकर जन-साधारण को एकता का मंत्र दिया:-

साच कहूं सुन लेहू सबै जिन प्रेम कियो तिनही प्रभु पायो,
मानस की जात सबै एकै पहचान बो,
देहि शिवा वर मोहि एहै शुभ करमन ते कबहु न टरौ।

यही कारण है कि गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज के व्यक्तित्व की तुलना साधु टी. एल. वासवानी ने इस प्रकार की है:- "उनमें अतीत में अवतरित सभी ईश्वर पुत्रों के गुण विद्यमान थे। गुरु नानकदेव जी महाराज की विनम्रता, ईसा मसीह की तरस भरी मासूमियत, महात्मा बुद्ध का आत्मज्ञान, हजरत मुहम्मद का लबलबाता जोश, भगवान श्रीकृष्ण जी का सूर्यव्रत प्रताप, भगवान राम जैसा मर्यादा पुरुषोत्तम, तथा शहंशाहों वाली शान श्री गुरु गाबिन्द सिंह जी महाराज में थी।"

अल्ला यार खां ने पूरे विश्वास के साथ कह दिया है:-

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की त्याग भावना भी कम प्रेरणादायक नहीं है। इसीलिए सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी लाला दौलत राय ने लिखा है महाभारत में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा था - सबसे महान् त्यागी वह है, जो दूसरों की भलाई के लिए रणभूमि में अपने प्राण त्यागे। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने दूसरों के लिए न केवल अपने प्राण न्यौछावर किए वरन् जो कुछ भी अपना था, वह सारे देश को अर्पण कर दिया। अपने प्यारे भारत में कौन है? उर्दू के वरिष्ठ पत्रकार लाला रणवीर जी ने अपनी पुस्तक "युग पुरुष" में लिखा है-"गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने भवानी भगवती चण्डिका को उठाया तो किसी धर्म या सम्प्रदाय के विरुद्ध नहीं प्रत्युत हिंसा, आचरण, अन्याय, पाप और दासता का सर्वनाश करने के लिए।"

इतना ही नहीं भारतीय संस्कृति एवं हिन्दू धर्म की रक्षा में उनका योगदान अपूर्व रहा है। यह एक अभूतपूर्व घटना है कि मात्र नौ वर्ष की उम्र में और वह भी माता-पिता का इकलौता पुत्र होते हुए भी उन्होंने हिन्दू धर्म की रक्षा एवं तिलक जनेउ को जवरन समाप्त करने के विरोध में अपने पिता श्री गुरु तेग बहादुर जी महाराज को 11 नवम्बर, 1975 ई. को चांदनी चौक दिल्ली में शहीद होने के लिए निवेदन किया जिनकी यादगारी में निर्मित राजधानी गुरुद्वारा शीशगंज एवं गुरुद्वारा रकाबगंज मानवीय एकता के ज्वलंत उदाहरण है। उन्होंने डंके की चोट पर कहा है:-

सकल जगत में खालसा पंथ गाजै।
जगे धर्म हिन्दुन सकल धुंध भाजै।

भारतीय संस्कृति एवं धर्म के हिमायती के रूप में श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी को कभी नहीं भुलाया जा सकता है:-

सोई भवानी नाम कहाई
जिन यह सगली सृष्टि बनाई।
सरब काल है पिता हमारा,
देवि कालिका मात हमारा।

उनकी कृति रामावतार (गाबिन्द रामायण) में वर्णन है:-

राम कथा जुग-जुग अटल सब कोउ भाखे नेत।
स्वर्गवास रघुवर किया सगली पुरी समेत।
जो यह कथा सुने अरु गावे
दु:ख पाप तह निकट न आवे।
विष्णु भक्त की यह फल होई,
अधिव्याधि कर सके न कोई।

कृष्णावतार में श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने लिखा है:-

आये गोपी, आये कान्हा, आये गउ चरानेवाला।
देव सभै मिलि देखन कोतुक ज्यों मुरली नन्द लाल बजाई।

उन्होंने गोमाताएवं ब्राह्मण वंश की रक्षा के लिए जो प्रतिज्ञा की दशम ग्रन्थ में इस प्रकार वर्णित है:-

यही आस पूरन करो हमारी।
मिटे कष्ट गोउन छूटे खेद भारी।
ब्राह्मण गोउ वंश घात अपराध टारे।

हिन्दू संस्कृति के पोषक के रूप में हम गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज को कभी नहीं भूल सकते-उन्होंने डंके की चोट पर कहा है:-

प्रभु जू तो कहु लाज हमारी।
नीलकंठ नरहरि नारायण नील बसन बनवारी।
पर पुरख परमेश्वर स्वामी पावन पवन आहारी।
माधव महा जोत मह मरदन पान मुकंद मुरारी।

राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने कहा है:-

क्या चिंता यदि अस्त हो गया, तेग बहादुर रूप चन्द्र।
देखे गोविन्द दिवाकर, उदित हुआ यह नितंब।
सिख सिंह के भाग्य विधाता, निर्माता थे गुरु गोबिन्द।
जो दे गये वंश की बलि, वे दाता थे गुरु गोबिन्द।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की सम दृष्टि का ज्वलंत उदाहरण युद्ध के मैदान में भी देखा जा सकता है। युद्ध के मैदान में उनका एक शिष्य भाई कन्हैया सिख एवं मुसलमान दोनों पक्षों के घायल अपाहिजों को पानी पिला रहा था। इस पर कुछ सिख सिपाही गुरु गोबिन्द सिंह जी के पास जाकर भाई कन्हैया की शिकायत करते हैं कि वह अपने दुश्मन मुसलमान सिपाहियों को भी पानी पिलाता है। इस पर गुरु जी ने स्पष्टीकरण दिया:- यह हमारा कर्त्तव्य है-मानवता के लिए जरूरी है। पानी पिलाने की बात क्या वह उन घायलों की मरहम पट्टी भी किया करे। यही हमारा धर्म है।

वास्तविकता तो यह है कि गुरु गोबिन्द सिंह जी का मानवतावाद सर्वकालिक है। उनकी लड़ाई इस्लाम एवं मुसलमानों के खिलाफ नहीं थी वरन् मुगल साम्राज्य द्वारा किए जा रहे धर्म पर कुठाराघात, जुल्म एवं अत्याचार के खिलाफ थी। उन्होंने स्पष्ट लिखा है।

दशम कथा भागौत की भाखा करि बनाई।
अवर वासना नाहिं प्रभु धर्म जुध के चाई।

मेरे साहित्यिक गुरु आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने सच ही लिखा है:-

"धन्य है, वह देश, जहां-गुरु गोबिन्द सिंह उत्पन्न हुए थे। उन्होंने इस देश की जनता की अपार शक्ति का उद्घाटन किया। उनका स्मरण करके हम आज भी नई प्रेरणा और शक्ति पा सकते हैं-पा रहे हैं।"

आज हम संत सिपाही साहित्यकार श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का प्रकाशोत्सव (जयंती) पूरे विश्व में सोल्लास मना रहे हैं- आज जरूरत इस बात की है कि हम सभी संकल्प लें-देश की एकता, अखंडता, विश्व बन्धुत्व एवं सेवा के लिए। हम संकल्प लें उनके संदेश- "मानस की जात सबै एकै पहचानबो" को ईमानदारी पूर्वक जीवन में उतारने का, प्रयोगात्मक रूप देने का, तभी हम गुरु का सच्चा सिख हो सकते हैं।

पटना साहिब
गुरुवाणी-प्रचार केन्द्र-800008

गीता परिवार, विवेकानंद व विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित

स्वामी विवेकानंद चिन्तन शिविर, श्री क्षेत्र आळंदी

प्रमुख मार्गदर्शक : आदरणीय श्री स्वामी गोविन्ददेव गिरी

आत्मविस्मृत बने हिन्दू समाज को धर्म की तथा स्वाभिमान की जागृति देने का और विज्ञान की कसौटी पर हिन्दू धर्म की ध्वजा, यूरोप, अमेरिका में फहराने का काम स्वामी विवेकानंद जी ने किया है। उनके राष्ट्रधर्म कार्य की जानकारी नई पीढ़ी को कराने की आज बहुत आवश्यकता है। 100 धर्म प्रेमी युवक मुझे दीजिये मैं देश का भविष्य बदल दूँगा। ऐसा वचन देने वाले स्वामी जी को ऐसे तेजस्वी युवक देना यह जिम्मेदारी हम सभी की है। अगले 50 साल केवल भारत माता को ही देवता मानकर राष्ट्रधर्म जगाने का काम करना आवश्यक है। इसलिए स्वामी जी का जीवन और राष्ट्रधर्म सभी धर्माचार्यों को समझने की आवष्यकता है।

स्वामी जी तरह राष्ट्रधर्म का चिन्तन और उद्बोधन करने का आजीवन व्रत लिये **आदरणीय श्री स्वामी गोविन्द गिरी (आचार्य श्री किशोर जी व्यास)** जैसे अधिकारी विभूति यह दायित्व ले ये हमारी प्रार्थना स्वामी जी ने सुन ली है। अब उन्हीं की अमृत वाणी से विश्व को वात्सल्य का वरदान देने वाले श्री ज्ञानेश्वर माऊली की आलंदी नगरी में स्वामी विवेकानंदजी की जयंती के पावन पर्व पर सभी पंथ संप्रदायों के पूजनीय धर्माचार्यों के साथ दिनांक 12, 13 और 14 जनवरी 2012 को **स्वामी विवेकानंद विचार चिन्तन शिविर का आयोजन किया है। इस शिविर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया है। इस शिविर में स्वामी गोविन्दगिरी महाराज, महामंडलेश्वर श्री विश्वेश्वरानंद महाराज, जगद्गुरु श्री वामनाचार्य, जगद्गुरु श्री नरेन्द्र महाराज, ह.भ.प. श्री बंडातात्या कराडकर, ह.भ.प. श्री लहवितकर महाराज आदि धर्माचार्य तथा सरकार्यवाह भैय्या जी जोशी, श्री मधुभाई कुलकर्णी, मा. कार्याध्यक्ष श्री प्रवीण भाई तोगड़िया, मा. विनायक जी देशपांडे, मा. श्री अशोक जी तिवारी** आदि प्रमुख अधिकारी तथा कार्याकर्ता उपस्थित रहने वाले है।

श्री सदुभाऊ कुलकर्णी
धर्माचार्य संपर्क प्रमुख, पं. महाराष्ट्र प्रांत

राष्ट्रपति के नाम पत्र

मुझे निर्वस्त्र करके उल्टा टांगा.....

-स्वामी असीमानन्द

सीबीआई के अधिकारियों ने मुझे हरिद्वार से (18 नवम्बर 2010) को गिरफ्तार किया और जब मुझे हरिद्वार से दिल्ली लाया जा रहा था, तो सीबीआई अधिकारियों ने कई मौकों पर वाहन को सड़क किनारे घुप अंधेरे में रोककर, मुझे जमीन पर घुटनों के बल बैठाया। मेरी कनपटी पर पिस्तौल तानकर उन्होंने कहा कि या तो उनका कहा मानूं या जान से हाथ धोऊं। उन्होंने धमकाया कि वे मुझे दौड़ते वाहनों की तरफ धक्का देंगे और मेरी मौत एक दुर्घटना मानी जाएगी। मैंने मौत के भय को इतने करीब से कभी नहीं जाना था। मैं दृढ़ रहा।

सीबीआई अधिकारियों ने मुझे कहा कि मैं न तो किसी से बोलूं, न ही कोई वकील लूं। सीबीआई अधिकारी हर समय मुझे घेरे रहते और अदालत में पेशी के वक्त मेरे अंदर डर बैठा हुआ था। मेरी इच्छा हो रही थी कि अदालत में सब बता दूं, लेकिन उनको चारों घेरा डाले देखकर हिम्मत नहीं हुई कि उनके खिलाफ जाकर अपने परिवार के सदस्यों की सलामती को जोखिम में डालूं।

हैदराबाद की अदालत ने सीबीआई को सुबह 9 बजे से शाम 6 बजे तक पूछताछ करने की अनुमति दी, लेकिन सीबीआई रात-रात भर मुझे यातना देती रही और मुझे अपनी हिरासत में रखे रही। सीबीआई अधिकारियों ने मेरा अपमान किया।...... शारीरिक और मानसिक यातना का उनका सिलसिला तब तक जारी रहा जब तक कि मैं न्यायायिक हिरासत में नहीं पहुँच गया।.... यह देखकर मैं हैरान रह गया कि न्यायायिक हिरासत में भी सीबीआई और बाद में एनआईए कर्मियों को जेल में मुझ तक आने की खुली छूट मिली हुई थी। कई मौकों पर आधी रात के बाद मुझसे अपमानजनक व्यवहार किया जाता और विस्फोट के कई मामलों में शामिल होना स्वीकारने को धमकाया जाता। उन्होंने धमकी दी कि अगर उनकी बात नहीं मानी तो मेरी माँ, भाईयों और दूसरे परिजनों को भी खत्म कर देंगे। उन्होंने मुझे धमकाया कि यातना दिए जाने की बात मजिस्ट्रेट को न बताऊँ।

मेरे आश्रम से लाया गया एक व्यक्ति हिरासत में था। मुझे आतंकित करने के लिए उसे मेरे सामने निर्वस्त्र करके बुरी तरह मारा-पीटा गया, यातनाएं दी गई। मुझे उससे भी गंभीर नतीजे भुगतने की धमकी दी गई। सीबीआई अधिकारी इस हद तक गये कि मुझे निर्वस्त्र उल्टा टांगा और मेरे...।

दिल्ली की तिहाड़ जेल में न्यायायिक हिरासत के दौरान, मुझे एक कोठरी में दो मुस्लिम कैदियों के साथ रखा गया। वे जानते थे कि मैं कौन हूँ। उन्होंने कहा, कि अगर मैंने सीबीआई का कहा न माना तो वे जेल में ही मुझे आसानी से खत्म कर सकते हैं। मैं बेहद सदमें की हालत में था और धमकियों का सामना करने की हिम्मत नहीं थी। मैंने अदालत में उनके मन-माफिक बयान दे दिया।

उन्होंने मुझपर ताने कसे, 'कहां है तुम्हारे हिन्दू अनुयायी और समर्थक?' ऐसी निरीह हालत में जहाँ मेरी जान पर बनी थी, उन्होंने मुझपर अजमेर बम कांड की जिम्मेदारी स्वीकारने वाला प्रार्थना पत्र लिखने का दबाव डाला।

मेरा बयान उस शारीरिक और मानसिक यातना का नतीजा था जो अकल्पनीय है। उस बयान को वापस लिया जा चुका है। मेरे उस बयान पर किसी न्यायायिक अदालत ने किसी तरह का फैसला नहीं दिया है। आखिर मालेगांव के आरोपियों को मेरे वापस लिये बयान के आधार पर जमानत कैये दी जा सकती है, जबकि वे खुद इस मामले में इकबालिया बयान दे चुके थे?

ऊपर जो अंश दिए गए हैं वे स्वामी असीमानंद की चिट्ठी से हैं। ये और ऐसे कितने ही विवरण हैं उस चिट्ठी में जो स्वामी असीमानंद ने 26 नवम्बर 2011 को अम्बाला जेल से देश की राष्ट्रपति को लिखी है। ये ऐसे कई रोंगटे खड़े कर देने वाले घटनाक्रमों की कलई खोलती है जो चिट्ठी के अनुसार, केन्द्रीय गृहमंत्री के निर्देश पर सीबीआई, राष्ट्रीय जाँच एजेंसी (एनआईए) और आतंक विरोधी दस्ते (एटीएस), राजस्थान के अधिकारियों द्वारा मक्का मस्जिद, समझौता एक्सप्रेस और अतमेर बम विस्फोट मामलों में हिरासत में लिए गए एक हिन्दू संन्यासी स्वामी असीमानंद

को दी गई शारीरिक और मानसिक यातनाओं की कहानी कहते हैं। हिरासत में अब तक, लगभग एक साल से कुछ ज्यादा वक्त के दौरान स्वामी असीमानंद को, उनके अनुसार, उक्त मामलों में दोषी साबित करने के लिए कितनी ही अदालतें, जेलों, शहरों के चक्कर कटाए गए, बद से बदतर सलूक किया गया और झूठे बयानों और मनगढंत आरोपों को मानने का दबाव डाला गया, जबरन दस्तखत कराए बयानों को उनका इकबालिया बयान कहकर मीडिया में हिन्दू संत का (और उसके जरिए राष्ट्रभक्त संगठनों और हिन्दू समाज) का अपमान कराया गया, अदालत के सामने सच उगलने के भयंकर नतीजे भुगतने की धमकी दी गई और उनके वापस लिए जा चुके उस बयान के आधार पर अभी पिछले दिनों मालेगांव मामले में आरोपी सात मुस्लिम दोषियों को जमानत दे दी गई। ऐसे न जाने कितने खुलासे हैं जो पहली बार उचित कानूनी मदद मिलने के बाद स्वामी असीमानंद ने राष्ट्रपति को चिट्ठी लिखकर बताए हैं। 9 पन्नों की इस विस्तृत चिट्ठी की प्रतियां भारत के प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, कैबिनेट सचिव, सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश, पंजाब व हरियाणा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश, आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश, महाराष्ट्र उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश, दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को भी भेजी गई हैं।

चिट्ठी से साफ है कि स्वामी असीमानंद को यातना देने और तीनों मामलों का जिम्मा अपने ऊपर लेने का जो दबाव डाला गया उसका उद्देश्य, पिछले दिनों के दिग्विजय सिंह, चिदम्बरम् और संप्रग के दूसरे नेताओं के बयानों के प्रकाश में, केवल और केवल हिन्दू समाज पर कीचड़ उछालना, उसे 'आतंकवाद का जिम्मेदार' ठहराना और राष्ट्रनिष्ठ संगठनों को लांछित करना ही था। कई मौको पर स्वामी असीमानंद ने सच-सच बोलना चाहा, पर हर बार जान से मारने की धमकी दी गई, कभी माँ, परिजनों को खत्म करने की धमकी दी गई तो कभी शारीरिक यातनाएं देकर उन्हें सदमें की स्थिति में पहुँचाकर गढ़े हुए बयानों पर दस्तखत लिए गए। सरकार की धमक के नीचे काम करने वाला मीडिया का एक वर्ग उनके 'स्वीकारोक्ति' बयान को तो कई कई दिन तक दिखाता/छापता रहा, पर सच बयान करने वाली चिट्ठी पर उसकी तंद्रा नहीं टूटी।

नब कुमार सरकार उपाख्य स्वामी असीमानंद ने राष्ट्रपति को साफ लिखा है कि उन्हें 'सीबीआई, एमआईए और एटीएस, राजस्थान ने एक गहरे राजनीतिक षड्यंत्र के फलस्वरूप झूठे आरोपों में फंसाया है।' क्योंकि, स्वामी असीमानंद के अनुसार वे संन्यासी हैं और मतान्तरित वनवासी ईसाइयों की हिन्दू धर्म में घर वापसी करवा रहे थे इसलिए उन्हें निशाना बनाकर बेवजह आरोपी बनाया गया है। चिट्ठी में वे लिखते हैं, 'मीडिया और वे मेरे वकीलों से पता चला कि मालेगांव विस्फोट मामलों के कई आरोपियों को अदालत ने छोड़ दिया है। इससे पहले केन्द्रीय गृहमंत्री ने सार्वजनिक बयान दिया था, जो काफी प्रमुखता से प्रसारित हुआ था, कि एनआईए ने उनकी जमानत का विरोध नहीं किया, मेरे जबरन लिए गए इकबालिया बयान के आधार पर।' स्वामी असीमानंद ने राष्ट्रपति से संवैधानिक प्रमुख होने के नाते कुछ बिन्दुओं पर अविलम्ब गौर करने का अनुरोध किया है ये हैं-

1. केन्द्रीय गृहमंत्री को क्या अधिकार था कि वे एनआई को मालेगांव आरोपियों, जो सभी मुस्लिम हैं, की जमानत अर्जी का विरोध न करने का निर्देश दे रहे थे?

2. क्या एनआईए, जो केन्द्रीय गृहमंत्री के आदेशों पर काम करती है, को एक निष्पक्ष जाँच एजेंसी माना जा सति है?

3. आखिर मेरे जबरन लिए बयान, जिसे वापस ले लिया गया था, को मालेगांव आरोपियों की जमानत के लिए कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है, जबकि किसी अदालत ने मेरी बयान वापस लेने की अर्जी पर किसी तरह का कोई फैसला नहीं सुनाया है?

4. एनआईए उन मुस्लिम आरोपियों के इकबालिया बयान और भारत सरकार द्वारा अमरीका और संयुक्त राष्ट्र को दी गई सूचनाओं (कि समझौता विस्फोट के पीछे लश्करे तोएबा और 'हूजी' आतकवादियों का हाथ है) को देखते हुए?

वे लिखते हैं, 'न्याय का यह कैसा मजाक है। एक तरफ जाँच एजेंसियों और सरकारी हस्तकों द्वारा मुझसे बयान उगलवाने को मेरे जैसे हिन्दू संन्यासी को अकल्पनीय और असहनीय अपमान व उत्पीड़न किया जा रहा है और दूसरी

शेष पृष्ठ 26 पर......

सप्तर्षि मंडल के महर्षि : स्वामी विवेकानन्द

-राजेन्द्र चड्ढा

आज भारत जाग रहा है महलों से लेकर झोपड़ियों में भी-गर्व से कहो हिंदू हैं-इस मंत्र के दृष्टा थे रामकृष्ण परमहंस के "सप्तर्षि मण्डल के महर्षि" स्वामी विवेकानन्द जो हमेशा कहा करते थे जब मनुष्य अपने पूर्वजों के बारे में लज्जित होने लगे तो सोच लो की उनका अन्त आ गया है। मैं हिन्दू हूँ मुझे अपनी जातिपर गर्व है अपने पूर्वजों पर गर्व है हम सभी उन ऋषियों की संतान हैं जो संसार में अद्वितीय रहे उन्होंने हमें संदेश दिया "आत्मविश्वासी बनों अपने पूर्वजों पर गर्व करो" जब मनुष्य स्वयं से घृणा करने लगता है तो समढना चाहिये कि मृत्यु उसके द्वार पर आ पहुँची।

स्वामीजी ने जो विचार व तरंगें वातावरण में फैलाई वह व्यर्थ नहीं गई। डा. हेडगेवार ने उस परम्परा को आगे बढ़ाया। आज हिन्दुत्व के प्रति स्वाभिमान का भाव सर्वत्र सर्वव्यापी बन रहा है इस देश का दुर्भाग्य है कि सुप्रीम कोर्ट में हिन्दुत्व शब्द के प्रयोग को भी चुनौति दी जाती है लेकिन सम्पूर्ण देश में खुशी की लहर दौड़ जाती है जब सुप्रीम कोर्ट द्वारा इस शब्द के प्रयोग पर आपत्तिजनक नहीं बताया जाता है सैक्युलखादियों को जिन्हें इस शब्द से चिढ़ है, अपना मुख नीचे करके कोर्ट से वापिस आना पड़ता है। इस कोर्ट के निर्णय के बाद स्वामी जी के शब्द अवश्य स्मरण आते हैं जब उन्होंने कहा था मैं भविष्य नहीं देखता। पर दृश्य अपने मन के चक्षुओं से अवश्य देख रहा हूँ कि प्राचीन मातृभूमि एक बार पुनः जाग गई है पहले से भी अधिक गौरव और वैभव से प्रदीप्त है। शांत और मंगलमय स्वर में अपनी पुर्नप्रतिष्ठा की घोषणा समस्त विश्व में करें।

पश्चिमी अंधानुसरण पर चोट

आज जिधर देखो पाश्चात्य की ओर हम अंधा-धुंध भाग रहे हैं। उनके विचारों का अुधानुकरण करने की जो आदत बन गई है उन पर तीखा प्रहार करते हुए वे कहते हैं भारत! यही तुम्हारे लिये सबसे भयंकर खतरा है। पश्चिम के अंधानुकरण का जादू तुम्हारे सिर पर इतनी बुरी तरह से सवार है कि क्या अच्छा क्या बुरा उसका निर्णय अब तर्क बुद्धि न्याय हिताहित, ज्ञान या शास्त्रों के आधाार पर नहीं किया जा सकता बल्कि जिन विचारों के पाश्चात्य लोग पसंद करें वही अच्छा है या जिन बातों की वे निंदा करें वह बुरा है इससे बढ़कर मूर्खता का परिचय कोई क्या देगा। "नया भारत कहता है

पाश्चात्य भाषा, पाश्चात्य खानपान पाचात्य आचार को अपनाकर ही हम शक्तिशाली हो सकेंगे।" दूसरी ओर पुराना भारत कहता है "हे मूर्ख कहीं नकल करने से भी कोई दूसरों का भाव अपना हुआ? बिना स्वयं कमाये कोई वस्तु अपनी नहीं होती क्या सिंह की खाल ओढ़कर गधा भी सिंह बन सकता है?

आज तक कम्यूनिस्ट तथा मैकाले पंथी स्वामीजी पर हमेशा टीका टिप्पणी करते रहे लेकिन अब वे भी विवेकानन्द को अपनी दृष्टि से समझने का प्रयत्न कर रहे हैं। यह सब करना उनकी मजबूरी बनती जा रही है। जो लोग हमेशा कहते रहे विवेकानन्द पढ़ा लिखा बेरोजगार था परमहंस मिर्गी के मरीज थे और जिन लोगों ने विवेकानन्द के चित्र के स्थान पर अपने राज्य में जबरदस्ती लेनिन की प्रतिमा लगवा दी थी आज विवेकानन्द के विचारों को अपने हिसाब से समझने का प्रयत्न कर रहे हैं। शायद अपने सिद्धान्तों पर ये विवेकानन्द को उतारने में सफल नहीं होंगे इसलिए स्वामीजी के आधारभूत तत्वों का परिचय कराना अति आवश्यक है। आर्यो के आगमन के सिद्धान्त पर कि आर्य लोग बाहर से आये यह सिद्धान्त पर कि आर्या लोग आहर से आये यह सिद्धांत जब बताया जा रहा था तब स्वामीजी ने कहा तुम्हारे यूरोपियों पंडितों का कहना है कि आर्य लोग किसी अन्य देश से आकर भारत पर झपट पड़े निरी मूर्खता पूर्ण बेहूदी बात है आश्चर्य तो इस बात का है कि भारतीय विद्वान भी उन्हीं के स्वर में स्वर मिलाते लगते हैं।

वे दृढ़ता से कहते हैं कि किस वेद या सूक्त में तुमने

पढ़ा कि आर्य दूसरे देशों से भारत में आए? आपकी इस बात का क्या प्रमाण है कि जंगली जातियों को मार-काट कर यहाँ निवास किया? इस प्रकार की निरर्थक बातों से क्या लाभ, योरोप का उद्देश्य है-सर्वनाश करके स्वयं अपने को बचाये रखना जबकि आर्यों का उद्देश्य था सबको अपने समान करना या अपने से भी बड़ा करना। योरोप में केवल बलवान को ही जीने का हक है दुर्बल के भाग्य में तो केवल मृत्यु का विधान है इसके विपरीत भारतवर्ष मं प्रत्येक सामाजिक नियम दुर्बलों की रक्षा हेतु बनाया गया है।

आज दुर्भाग्य से बुद्धिजीवियों द्वारा इस सिद्धान्त को लेकर भरसक प्रयत्न किये जा रहे हैं। इस सिद्धान्त को आधार मानकर भारत को तोड़ने का एक अलग प्रकार का प्रयास किया जा रहा है।

"भारत में धर्मान्तरण की दृष्टि से आनेवाले को चेतावनी"

तुम लोगों को प्रशिक्षित करते हो, खाना कपड़ा और वेतन देते हो काहे के लिये? क्या इसलिए के हमारे देश में आकर पूर्वजों धर्म और सब पूर्वजों को गालियाँ दें और मेरी निंदा करें? वे मंदिर के निकट जाएं और कहें "ओ मूर्ति पूजकों! तुम नरक में जाओगे!" किंतु ये भारत के मुसलमानों से ऐसा कहने का साहस नहीं कर पातें, क्योंकि तब तलवार निकल आयेगी! किंतु हिन्दू बहुत सौम्य है वह मुस्कुरा देता है यह कहकर टाल देता है "मूर्खों को बकने दो" यही है उसका दृष्टिकोण तुम स्वयं तो गालियाँ देने व आलोचना करने के लिए लोगों को शिक्षित करते हो यदि मैं बहुत अच्छा उद्देश्य लेकर तुम्हारी तनिक भी आलोचना करूँ तो तुम उछल पड़ते हो और चिल्लाने लगते हो कि हम अमेरिकन हैं हम सारी दुनिया की आलोचना करें, गालियाँ दें, चाहे जो करें हमें मत छेड़ो हम छूई-मुई के पेड़ हैं।"

तुम्हारे मन में जो आए तुम कर सकते हो लेकिन हम जैसे भी जी रहे हैं हम संतुष्ट हैं और हम एक अर्थ में अच्छे हैं। हम अपने बच्चों को कभी भयानक असत्य बोलना नहीं सिखाते और जब कभी तुम्हारे पादरी हमारी आलोचना करें वे इस बात को न भूलें कि यदि संपूर्ण भारत खड़ा हो जाए हिंदू महादधि की तलहटी की समस्य कीचड़ को उठा कर पाश्चात्य देंशों के मुँह पर भी फेंक दे तो उस दुर्व्यवहार का लेश मात्र भी न होगा जो तुम हमारे प्रति कर रहे हो। हमने किसी धर्म प्रचारक को किसी अन्य के धर्म परिवर्तन के लिये नहीं भेजा हमारा तुमसे कहना है कि हमारा धर्म हमारे पास रहने दो।

आज अपने धर्मांन्तरित बंधुओं को जो हिन्दू मुसलमान व ईसाई बने हैं या तो अधिकतर तलवार के भय से बने हैं या जो इस प्रकार बनें हैं उनके वंशज हैं इन लोगों पर किसी प्रकार की अयोग्यता आरोपित करना अन्याय होगा। निश्चित रूप से ही प्रयश्चित का अनुष्ठान अपनी इच्छा से धर्म परिवर्तन करने वालों के लिए उपयुक्त है।

यदि हम अपने बंधुओं को वापस अपने धर्म में नहीं लेंगे तो हमारी संख्या घट जायेगी। जब मुसलमान पहले पहल यहाँ आये तो कहा जाता है, मैं समझता हूँ, प्राचीनतम इतिहास लेखक फरिश्ता के प्रमाण से, कि हिन्दुओं की संख्या साठ-करोड़ थी अब हम लोग बीस करोड़ हैं फिर हिंदू धर्म में से जो एक व्यक्ति बाहर जाता है उससे हमारा एक व्यक्ति ही कम नहीं होता एक शत्रु भी बढ़ जाता है। उदाहरण के लिये यदि आज के वर्तमान संदर्भ में भी स्वामीजी की बात कितनी सत्य है। आज काश्मीर व पूर्वांचल के राज्य में क्या नहीं हो रहा है यदि हम इस चेतावनी को नहीं समझेंगे तो और भी नुकसान उठाना पड़ सकता है। आज ईसाई व मुस्लिम दोनों ही समाज के गरीब लोगों को लालच देकर धर्मान्तरित करने के प्रयास में लगे हुए हैं।

स्वामीजी ने कहा भारत में एकता का सूत्र भाषा या जाति न होकर धर्म है। धर्म ही राष्ट्र का प्राण है। धर्म छोड़ने से हिंदू समाज का मेरूदंड ही टूट जाएगा। इसी के साथ-साथ वनवासी गिरीवासी, झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले बन्धुओं के बीच जाना होगा उन्हें सत्य से अवगत कराना होगा, किस प्रकार पेड्रो डालर के बल पर तुम्हें सहायता देने के नाम पर तुम्हारा धर्म भी परिवर्तन करने के प्रयास चल रहे हैं।

स्वामीजी ने कहा तुम जो युगों तक भी धक्के खाकर अक्षय हो, इसका कारण यही है कि धर्म के लिए तुमने

शेष पृष्ठ 18 पर......

सफल जीवन निर्माण हेतु माया में न डूबें

-डॉ. उषा खोसला

माया के रंग में मनुष्य

मनुष्य जितना माया के रंग में रंगता जा रहा है उतना ही अज्ञान के निकट ज्ञान से दूर होता जा रहा है। माया के कारण ही तो अज्ञान है। यही मनुष्य के दु:ख का कारण है। यदि वर्तमान समय का मनुष्य पहले से अधिक दु:ख चिन्ता, तनाव तथा रोगों से ग्रसित होता जा रहा है तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है? वह अपने किये स्वयं ही विपरीत स्थितियाँ पैदा कर रहा है। अनुकूल स्थितियाँ तब पैदा होगी जब मनुष्य माया के रंग में नहीं भगवान के रंग में रंगेगा। चिन्ता तथा तनाव तो तब मिटेंगे जब वह माया का आवरण हटायेगा और मन में आनंद के सागर को बिठायेगा। रोग तथा शोक तो तब दूर भागेंगे जब बुद्धि से ताया का रंग उतर कर इसमें विवेक का प्रार्दुभाव तथा वध न होगा। माया का रंग मनुष्य को मन तथा इन्द्रियों का गुलाम बनाता जा रहा है। मन तथा इन्द्रियों का गुलाम मनुष्य कभी भी सुखी नहीं हो सकता। मनुष्य स्वयं चिन्तन करे कि वह दु:खी क्यों है? उसका हर कृत्य उसको सुख पहुँचाने के लिये है लेकिन परिणाम में उसको दु:ख विषाद, चिन्ता, क्रोध क्यों मिल रहा है।

जीवन में माया का रंग चढ़ाना सनातन सत्य से कटना है। यही ऋषि परम्परा से टूटना है। इसे ही वेदों के नियम का उल्लंघन करना कहते हैं। यही प्रकृति के विरोध में खड़े होकर उसका अपमान करना है। यही राष्ट्र का अहित करना है यही मातृभूमि की सुरक्षा न कर पाना है। अज्ञान के अन्धकार में डूबा मनुष्य इन गहराईयों को नहीं समझ पा रहा। वह यह नहीं जानता कि माया उसे अनेकों रास्तों पर भटका रही है जो कैसे संस्कृति, सभ्यता, धर्म, अध्यात्मकवाद और राष्ट्र के लिये घातक सिद्ध हो रही है। वह अपना ही नहीं वह तो समाज, राष्ट्र और विश्व को नाकारात्मक उर्जा से भरता जा रहा है।

माया के रंग में रंगा मनुष्य संवेदनशीलता को खोता जा रहा है। दूसरों के प्रति भावना नहीं है। मन वासनाओं में डूबता जा रहा है। इन्द्रियों के तल पर ही जा रहा है। माया के जीवन को जटिल बना दिया। मनुष्य का मन माया के काले और लाल रंग से भर गया। पवित्रता, शुद्धता, शुचिता, सात्विकता का सफेद रंग मन से खो गया। मनुष्य का मन स्वतंत्र होकर खुले आकाश में स्वतंत्र पक्षी की तरह उड़ना चाहता है। मनुष्य का मन तो बन्धन मुक्त होना चाहता है। अज्ञान के कारण मनुष्य यह नहीं समझ पा रहा कि अज्ञान और जगत की जड़ माया इसके योग विलास के विषय इसकी सुख सुविधा की सामग्री इन सब की प्राप्ति के लिये बढ़ती हुई इच्छाशक्ति तो मन की स्वतंत्रता को छीन की इसको नित नये बन्धनों में जकड़ती जा रही है। अर्थात् मनुष्य का विचार ही अशुद्ध हो चुका है। उसके जीवन का आधार ही अशुद्ध हो गया है।

वह जीव के साथ ही रहता है। जब मनुष्य निम्न योनियों में था तब भी वह अलौकिक व्यक्ति उसके साथ रही। मृत्युलोक में है तब भी वह उसके हृदय में बैठे हैं। मृत्यु के पश्चात् जिस भी योनी में जायेगा वह चेतन शक्ति जिसे पार ब्रह्म परमेश्वर कहा जाता है उसके साथ ही रहेगी। मनुष्य सदा साथ रहने वालों के संगति करता नहीं। संसार के लोगों के कुसंग में फंसा हुआ है। उन्हीं को चाहता है। कहीं वे असंतुष्ट न हो जाये। कहीं वे साथ न छोड़ दें उनकी चिन्ता करता है। विपरीत विचारों को धारण करने से सनातन सत्य को कैसे उपलब्ध हो पायेगा? कैसे अभय होगा? कैसे तनावमुक्त और रोगमुक्त होगा? यह विचारणीय है। संसार के लिये व्यवहार करें, संसार का रंग भीतर मत आने दें तभी भीतर परम आश्रय का निवास होगा।

अहंकरी से भरा मनुष्य ऊँची-ऊँची उड़ाने भरता है। संसार संबंधी योजनायें बनाता है। मोह और द्वेष से भरा रहता है। आज एक शत्रु को मार दिया है। कल को दो और को ठीकाने लगा दूँगा। एक सप्ताह में ही करोड़पति बन जाउँगा। एक ही महीने के अन्दर नया भव्य-भवन बनाकर पड़ोसियों को नीचा दीखा दूँगा। मैं चाहूँ तो धन के बल पर सारे गाँव को खरीद लूँ। अगले ही क्षण हृदयाघात होने से अकेला अस्पताल में पड़ा दीखता है। साँस भी कठिनता से ले पा रहा है। अनेक चिन्ताओं से घिरा हुआ है। अब मेरी योजनाओं का क्या होगा? मेरे

परिवार को कौन संभालेगा? मेरे बैंक के खातों का क्या होगा? यह जगत की जड़ माया में फंसने के दुष्परिणाम।

माया के रंग का यही वास्तविक रूप है। यहां हर कोई दुःखी ही दुःखी है। यहां धनी भी दुःखी है और निर्धन भी दुःखी। यहाँ चिकित्सक भी दुःखी और रोगी भी दुःखी यहाँ राजा भी और प्रजा दोनों दुःखी। यहां सुन्दर और कुरुप दोनों तनाव में। इस जगत में संतान वाला भी और निःसन्तान भी चिन्ता में। चिन्ता रूपी नागीन दिन-रात मनुष्य को डस रही है। मनुष्य दिन रात इतने कष्ट सह रहा है तथापि इन कष्टों से छूटने के उपायों पर विचार नहीं करता। कभी बात, पित तथा कफ के असंतुलन होने से शरीर रोगी हो गया तो कभी काम, क्रोध, लोभ स मानसिक संतुलन बिगड़ रहा है। कभी दूसरों के द्वार सताया जा रहा है। यहाँ अपराधी रच जाते हैं और निरपराधी डंडे खा रहे हैं तथा जेल में जा रहे हैं। अज्ञान के कारण ऐसी व्यवस्था बिगड़ चुकी है कि चारों ओर अत्याचार के अतिरिक्त और कुछ दीखता ही नहीं। कभी मनुष्य प्रारब्ध से मिलने वाले कष्टों की मार झेल रहा है तो कभी गर्मी, सर्दी, बाढ़, तूफान, भूकम्प के प्रकोप का शिकार बन रहा है।

हे मनुष्य! तुम आनंद प्राप्ति की योग्यता लेकर ही पैदा हुये हो। अतः सजग हो जाओ। संसार के पापों, तापों को कब तक सहोगे? कब मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर चलोगे? कब अपने भीतर मुड़ोगे? कब जीवन का रूपान्तरण करोगे। कब साधना के मार्ग पर चलोगे? कब गुरुद्वार पर दस्तक दोगे। कब माँ भारत को प्रसन्न करने के मार्ग पर आगे बढ़ोगे। भारत माँ भी तुम्हारे पापों के बोझ को अब नहीं उठा पा रही। कब तक वह अपना अपमान सहती रहेगी। कब तुम उसके ऋण से उऋण हो पाओगे? कब तक हाथों में चूड़ियाँ पहने बैठे रहोगे? मातृभूमि से विश्वासघात मत करो। राष्ट्रभक्ति भगवान की ही भक्ति है। भक्ति के एक नहीं अनेक प्रकार हैं। शहीदों के बलिदानों को स्मरण करें। मातृभूमि तो स्वर्ग से भी बढ़कर है। देश की स्वाधीनता और अखंडता पर आँच मत आने दो। विचारों में परिवर्तन करें। माया के आवरण का भेदन करो इन्द्रिय लोलुपता मनुष्य को कहीं नहीं पहुँचाती। राम को मानते हो तो क्यों नहीं राम की करनी को मानते हो। तुम गीता का उपदेश मानते हो फिर गीता को क्यों नहीं मानते। युद्ध भूमि में अर्जुन की तरह डट जाओ फिर देश द्रोहियों और अत्याचारियों के दाँत तोड़ने में कोई कठिनाई नहीं आयेगी। सत्य और निष्काम कर्म साथ होने से सफलता तो निश्चित है।

जब से मनुष्य धर्म को व्यवहार में लाना छोड़ दिया तब से ही दुःखी-दुःखी सा दीखने लगा है। धर्म ही तो माया के आवरण का भेदन करना सिखाता है। धर्म जीवन में उतारना चाहिए। संसार की ऐशणाओं को त्याग कर धर्म पथ के पथिक वनों। वित्तेषणा, पुत्तेषणा, लोकेषणा, जीवन का लक्ष्य नहीं है। जीवन का लक्ष्य तो श्रेष्ठ परमधर्म है, राष्ट्रधर्म है। जीवन का लक्ष्य तो आनंदप्राप्ति और मोक्ष है।

मनुष्य के मन में जैसा विचार आता है बुद्धि अपने विरोध में निर्णय नहीं लेती। फिर मनुष्य वैसा ही करता है और वैसा ही वह बन जाता है शुद्ध सात्विक विचार मन में उठें। ऐसे विचार धर्म को धारण करने से ही उठेंगे। फिर मनुष्य सात्विक और दिव्य कार्य ही करेगा। धार्मिक कृत्यों के करने से माया का आवरण मन से हट जायेगा और मनुष्य कृत्य-कृत्य हो जायेगा।

हैवर्ड, सी.ए., 94544
यू.एस.ए.

.....पृष्ठ 16 का शेष

बहुत प्रयत्न किया था। उसके लिए अन्य सब कुछ न्योछावर कर दिया था तुम्हारे पूर्वजों ने धर्म संस्थापना के लिए मृत्यु को गले लगाया था। विदेशी विजेताओं ने मंदिरों के बाद मंदिर तोड़े किंतु जैसे ही वह आँधी गुजरी मंदिर का शिखर पुनः खड़ा हो गया। यदि सोमनाथ को देखोगे तो वह तुम्हें अक्षय दृष्टि प्रदान करेगा। इन मंदिरों पर सैकड़ों पुनरुत्थानों के चिन्ह किस तरह अंकित हैं वे बार-बार नष्ट हुए खंडहरों से पुनः उठ खड़े हुए पहले की ही भाँति यही है राष्ट्रीय जीवन प्रवाह। आओ इसका अनुसाण करें।

आओ! प्रत्येक आत्मा का आह्वान करें उतिष्ठ, जागृत, उठो, जागो और जब तक लक्ष्य प्राप्त न कर लो कहीं मत ठहरो। दौर्बल्य के मोह जाल से निकलो। सभी शिक्षित युवकों में कार्य करते हुए उन्हें एकत्र कर लाओ जब हम संगकठत हो जायेंगे, तो घास के तिनकों को जोड़कर जो रस्सी बनती है उससे एक उन्मत्त हाथी को भी बांधा जा सकता है।" उसी प्रकार तुम संगठित होने पर पूरे विश्व को अपने विचारों से बांध सकोगे।" ❑

बजरंग दल का त्रिशूल दीक्षा एंव गौरक्षा सम्मेलन

केन्द्र सरकार हिन्दू समाज के हर मानबिंदु को समाप्त करना चाहती है-भक्तिस्वरूपानन्द

केन्द्र सरकार हिन्दू समाज के हर मानबिन्दु को समाप्त करना चाहती है। वह साम्प्रदायिक और लक्षित हिंसा अधिनियम 2011 को लाकर हिन्दू संगठनों और उनके नेताओं को कुचलना चाहती है। यह विचार स्थानीय सुशीला भवन में आयोजित त्रिशूल दीक्षा समारोह व गौरक्षा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए महामंडलेश्वर स्वामी भक्ति स्वरूपानन्द ने रखे। इस अवसर पर विहिप के प्रांतीय उपाध्यक्ष प्यारे लाल लाहौरिया, जिला अध्यक्ष विश्वनाथ गर्ग, विभाग संयोजक रविन्द्र गोयल, विभागमंत्री अनिल गोयल, जिला संयोजक कपिल वत्स मंच पर उपस्थित थे।

गौरक्षा के सन्दर्भ में स्वामीजी ने कहा कि गाय को सम्पूर्ण हिदू समाज माता मानता आ रहा है लेकिन आजादी के 65 वर्ष बीत जाने के बाद भी गौहत्या का कलंक इस देश से मिटा नही। उन्होंने कहा कि 36 हजार बूचड़खानों व 10 यान्त्रिक कत्लखानों के द्वारा 50 हजार से अधिक गौधन प्रतिदिन कत्ल कर दिया जाता है। उन्होंने युवकों से गौरक्षा का आह्वान किया। त्रिशूल दीक्षा की भूमिका के सन्दर्भ में बजरंग दल के प्रांतीय संयोजक सुरेश वत्स ने बताया प्रतिवर्ष बजरंग दल के नए कार्यकताओं को देश, धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिए त्रिशूल दीक्षा दी जाती है। प्रत्येक युवक को शक्ति का प्रतीक त्रिशूल धारण करवा कर मानबिन्दुओं की रक्षा का संकल्प करवाया जाता है। विहिप के प्रांतीय मीडिया प्रमुख विजय शर्मा ने बताया कि बजरंग दल का त्रिशूल दीक्षा सेवा, संस्कार और सुरक्षा का प्रतीक है और यही बजरंग दल का आधार है। उन्होंने कहा कि सेवा ही शिव है, सुरक्षा ही सत्य है और संस्कार से ही सुन्दरता बनती है। त्रिशूल यही सत्य, शिव व सुन्दर का मूर्ति स्वरूप है। शर्मा ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज देश में जेहाद के नाम पर हिन्दुओं पर अत्याचार किया जा रहा है, लव जेहाद के नाम पर हिन्दू लड़कियों का जबरण धर्मान्तरण किया जा रहा है। मानबिन्दुओं को समाप्त किया जा रहा है, आईएसआई व आतंकवादी संगठन देश तोडनें का षडयन्त्र रच रहे है, कभी मुसलमानों को तो कभी दलित ईसाईयों को आरक्षण की मांग कर देश तोडने् का षडयन्त्र रचा जा रहा है जिसे यह हिन्दू समाज कभी स्वीकार नहीं करेगा। इस अवसर पर प्रांतीय गौरक्षा प्रमुख सतपाल मधु ने गौतस्करी पर चिंता व्यक्त करते हुए युवको को गौतस्करी रोकने का आह्वान किया। स्वामी भक्तिस्वरूपानन्द, अचार्य संतोष शास्त्री, आचार्य सुरेश मिश्रा, आचार्य नरेश शास्त्री, आचार्य रामकिशोर शुक्ला, स्वामी लोकेशानन्द ने 200 से अधिक बजरंग दल के कार्यकर्ताओं को पटका, श्रीहनुमान जी का लॉकेट, हनुमाचालिसा, व साहित्य देकर त्रिशूल दीक्षा दी। कार्यकर्ताओं ने सकंल्प दोहराया कि देशद्रोहियों द्वारा देश में पैदा की गई चुनौतियों का बजरंग दल मुंह तोड़ जवाब देगा। प्रांतीय उपाध्यक्ष प्यारे लाल लाहौरिया ने चेतावनी देते हुए कहा कि बसस्टैंड के समीप श्मशान घाट में किसी को भी क्रबिस्तान बनाने की इज़ाजत नही दी जाएगी यदि ऐसा प्रयास किया गया तो सम्पूर्ण हिन्दू समाज इसका कड़ा विरोध करेगा। समारोह में डा.कमल गुप्ता, प्रो. के.सी. अरोड़ा, विहिप के जितेन्द्र सोनी, संजीव गोयल, ओमप्रकाश फोगाट, सुरेश गुर्जर, राजीव गोयल, यशवंत सिंह बादल, नरेन्द्र वशिष्ठ, गोबिंद मधु, श्रीमती विजय लक्ष्मी, सुनीता शर्मा, मधु शर्मा, संतोष तायल आदि उपस्थित थे।

मंदिर का पुनर्निर्माण हो

बजरंग दल के प्रांत संयोजक नीरज दौनेरिया ने पत्रकार वार्ता में पत्रकार बन्धुओं को सम्बोधित करते हुए कहा जिला डोडा से लगभग 50 किलोमीटर दूर गलाधर क्षेत्र की एक पहाड़ी पर स्थित सुप्रसिद्ध (चौड़ माता) चंड़ी माता मंदिर के जलाने एवं ऐतिहासिक मूर्तियों को खंडित करने की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि माता के इस पौराणिक महत्व के मंदिर पर पहले भी 2009 में कई बार क्षती पहुँचाने की कौशिश की गई है जिसकी 2009 में दोषियों के खिलफ़ एफ॰ आई॰ आर॰ दर्ज कराई गई थी परन्तु जिस पर प्रशासन द्वारा कोई कारवाई नहीं की गई जिसके कारण मंदिर को पुनः क्षति पहुँचाई गई है।

उन्होंने कहा कि डोडा क्षेत्र के रहने वाले हिन्दुओं को किसी न किसी प्रकार अपमानित करने का प्रयास चलता रहता है जिसके कारण वहाँ के हिन्दु के अंदर भय व्याप्त है परन्तु उन लोगों को सह नहीं समझना चाहिए कि वह कमजोर हैं चंडी माता मंदिर हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं एवं आस्था को केन्द्र बिन्दु है जिसके कारण मंदिर के जलाए जाने से उनकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पँहुची है।

श्री नीरज ने कहा कि गलाधार क्षेत्र में बहुसंख्यक मुसलिम समुदाय के लोगों ने इस स्थान पर अपना अधिकार जमाने का प्रयास किया है। उन्होनें कहा कि प्रशासन दोषियों को बचाने का प्रयास कर रहा है और हिन्दुओं के धार्मिक मामले को दबाने की कोशिश कर रहा है जिसे बजरंग दल किसी भी प्रकार से बर्दाशत नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि प्रशासन एंव राज्य सरकार माता के मंदिर का जोर्णोद्वार 72 घण्टे में शुरू करवाएँ एवं मंदिर की सुरक्षा मुहैया करवाए और दोषियों को तत्काल गिरफ्तार कर शालाखों के पीछे भेजें अन्यथा बजरंग दल प्रदेश व्यापी आंदोलन छीड़ेगा।

पत्रकार वार्ता में राकेश शर्मा, नीरज कुमार, विकास, राजेश, दीप, अनिल आदि उपस्थित थे।

राजेश भसीन

जम्मू कश्मीर

❑

गांधी हत्या हिन्दू महासभा के कार्यकर्ताओं ने की थी संघ ने नहीं

अ.भा. हिन्दू महासभा के स्वागत समिति के अध्यक्ष डॉ0 संतोष राय ने अपने एक लिखित वक्तव्य में कहा कि कब तक हिन्दू विरोधी शक्तियां संघ पर आरोप लगाती रहेंगी कि संघ ने गांधीजी की हत्या की, जबकि संघ हमेशा यह कहता रहता है कि गांधी हत्या से हमारा कोई लेना-देना नही है, हमने गांधी हत्या नही किया है। डॉ0 संतोष राय ने अपने लिखित वक्तव्य में कहा कि गांधी हत्या अखिल भारत हिन्दू महासभा के कुछ निचले स्तर के कार्यकर्ताओं ने किया था। पं0 नाथूराम गोडसे व उनके कुछ सहयोगी हिन्दू महासभायी लोगों नें गांधी हत्या को सुनियोजित तरीके से किया। पं0 नाथूराम गोडसे व उनके मित्रों का संघ से कोई लेना-देना नही था।

अखिल भारत हिन्दू महासभा स्वागत समिति के अध्यक्ष डॉ0 संतोष राय ने आगे कहा कि यह सुनकर बहुत ही आश्चर्य होता है कि गांधी हत्या में संघ का हाथ है जबकि संघ ने कभी इसे स्वीकारा ही नही।

डॉ. राय नें अपने वक्तव्य में आगे कहा कि गांधी हत्या राष्ट्रहित में जरूरी था। क्योंकि गांधी के कारण ही भारत देश का सांप्रदायिक विभाजन हुआ। गांधी ने ही पाकिस्तान को 55 करोड़ रूपये देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। गांधी के कारण ही कश्मीर विवादित क्षेत्र बना, नेहरू जिसके पोषक थे। डॉ0 संतोष राय ने आगे कहा कि यदि गांधी हत्या न होती तो आज भारत-पाकिस्तान की सीमा नजफगढ़ होती।

डॉ. राय नें हिन्दू विरोधी शक्तियों को चेतावनी देते हुये कहा कि ऐसी शक्तियां हमसे लड़कर दिखायें हम उनका करारा जवाब देंगे। उन्होंने आगे कहा कि गोडसे वैसे ही पूजनीय हैं जैसे भगतसिंह व अन्य क्रांतिकारी। हिन्दू विरोधी शक्तियां संघ को बेकार में बदनाम न करें।

सपन दत्ता

मीडिया प्रभारी

❑

अमरनाथ यात्रा का मुहूर्त एवं दिनांक बोर्ड नहीं तय करेगा

- डॉ. सुरेन्द्र जैन

विश्व हिन्दू परिषद् के प्रतिनिधि मंडल ने बाबा अमरनाथ श्राईन बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री रामकुमार गोपाल से कल, 9 दिसम्बर, 2011 को मिलकर श्री अमरनाथ यात्रा के संचालन के संम्बध में बोर्ड के अध्यक्ष महामहिम राज्यपाल के नाम एक ज्ञापन दिया। डॉ॰ सुरेन्द्र कुमार जैन (केन्द्रीय मंत्री विश्व हिन्दू परिषद) की अध्यक्षता में इस प्रतिनिधि मंडल ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यात्रा का मुर्हुत, अवधि व स्वरूप निर्धारित करना बोर्ड के अधिकार क्षेत्र के बाहर है। श्राईन बोर्ड एक्ट बोर्ड के कार्यों को निर्धारित करता है। जो यात्रा के कुशल संचालन, व्यवस्था, सुरक्षा आदि कार्यों को करने का दायित्व बोर्ड को सौंपता है। मुहुर्त, अवधि व स्वरूप इस पवित्र धार्मिक यात्रा का आंतरिक मामला है। जिसमें हस्तक्षेप करने का अधिकार बोर्ड को नहीं दिया गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 25, 26, मा॰ सर्वोच्च न्यायालय के कई निर्णय व जस्टिस प्रमोद कोहली के निर्णय के अनुसार बोर्ड का यह प्रयास हिंदुओं के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप माना जाएगा। इस विषय पर निर्णय करने का अधिकार केवल पूज्य हिंदू संतो का है जो हिंदू परम्पराओं को ध्यान मे रखकर ही निर्णय लेते है। इस परम्परा के अनुसार यह यात्र ज्येष्ठ पूर्णिमा को ही शुरू होनी चाहिए। अगर मौसम व सुरक्षा आदि की प्रतिकुलता है तो यात्रियों को अनुकूलता बनने तक रोका जा सकता है। जैसा इस प्रकार की परिस्थिति में हमेशा ही होता है। इस प्रतिनिधि मंडल ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि इस पवित्र यात्रा को किसी भी प्रकार के विवादों से दूर रखने के लिए आवश्यक है कि यात्रा का मुर्हूत हमेशा के लिए एक ही दिन होना चाहिये। हर वर्ष मुर्हूत बदलने का प्रयास अनावश्यक विवाद पैदा करता रहेगा जो किसी के भी हित में नहीं है। हिंदू आस्थाओं और परम्पराओं के अनुसार वह दिन केवल ज्येष्ठ पूर्णिमा ही हो सकता है।

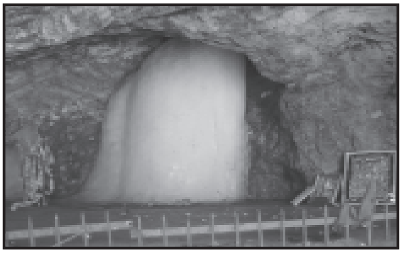

इस वर्ष यात्रियों की संख्या सात लाख के लगभग पहुंची है। आगामी वर्षो में यह संख्या दस लाख तक पहुंच सकती है। अवधि को 30-35 दिनों तक सीमित करने से इन सभी यात्रियों को दर्शन करने का अवसर उपलब्ध कराना सम्भव नही हैं। बाबा बर्फानी के दर्शन करना हर यात्री का अधिकार है, उसे इस अधिकार से वंचित करना बोर्ड द्वारा उसके कर्त्तव्यों द्वारा उल्लंघन माना जाएगा। बाबा बर्फानी के दर्शन करने के संवैधानिक अधिकार की रक्षा करने का दायित्व बोर्ड का है, उसे अपने को वहीं तक सीमिति रखना चाहिये।

विव हिंदू परिषद् ने बोर्ड के संवैधानिक कर्त्तव्यों के पालन में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिये अपनी सेवाएं प्रस्तुत करते हुए इस यात्रा की पवित्रता बनाये रखने और कुशल संचालन के लिए कुछ सुझाव भी दिये। तिरूपति, माता वैष्णों देवी, कुरूक्षेत्र आदि तीर्थो की तरह इस पवित्र स्थान को जाने वाले सभी सम्भावित मार्गो को मिलाकर बनने वाले क्षेत्र को अमरानाथ जी का क्षेत्र घोषित किया जाये। पहलगांव व बालटाल में 15-20 हजार की संख्या के लिए उपयुक्त स्थायी यात्री निवास बनाना चाहिए।

इस सुविधा के न होने के कारण ही मौसम की प्रतिकूलता होने पर भी प्रशासन यात्रियों की संख्या को संचालित नहीं कर पाता। बालटाल, नूनवर आदि में बड़े अस्पताल बनाना आवश्यक है। यात्रा मार्गों पर हर 2-3 कि॰ मी॰ पर जीवन रक्षक उपकरणों के साथ चिकित्सक नियुक्त होने चाहिये। इस प्रतिनिधि मंडल ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि बोर्ड का हिंदू चरित्र बनाना बहुत आवश्यक है जो संवैधानिक रूप से भी आवश्यक है।

इस प्रतिनिधि मंडल में विश्व हिंदू के प्रांत अध्यक्ष डॉ॰ रमाकांत दूबे, डॉ॰ शाम जी गुप्ता, प्रांत मंत्री विहिप, डॉ॰ वि॰ के॰ गुप्ता-महानगर अध्यक्ष विश्व हिन्दू परिषद्।

राजेश भसीन

जम्मू कश्मीर

ईसाई धर्म का बोलबाला

पंजाब राज्य के अमृतसर जिले का एक गांव है "गुराला"। इस गांव में अब से कुछ समय पहले कोई भी चर्च नहीं था। पर कुछ अन्दर जाने पर अब एक चर्च दिखता है। ये चर्च "करनैल सिंह" का है। "करनैल सिंह" पहले एक सिख था, पर अब एक ईसाई है। ये उसी सिख धर्म का है जिसके दसवे गुरु श्री गुरु गोविन्द सिंह ने अपने दो बेटों के साथ दीवार में चिनवा कर जान दे दी, पर अपना धर्म नहीं छोड़ा। सिख धर्म के इतिहास को बताने की जरुरत नहीं है, सभी देशवासी उसके गौरवशाली अतीत से परिचित हैं। इतना स्मरण करें कि सिख धर्म की स्थापना का उद्देश्य क्या था और किन परिस्थितियों में उसकी स्थापना की गई थी?

गुराला गांव के उस चर्च में करनैल सिंह अकेला नहीं है, वहाँ उसके साथ 150 स्त्री/पुरुषों का एक पूरा समूह है। करनैल सिंह पिछले 10 वर्षों से ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहा है। वो कहता कि सिर्फ पिछले एक वर्ष में उसने 34 हिन्दू और सिखों को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया है। वो गर्व से कहता है कि उसकी बेटी ने अभी-अभी बाइबिल के सन्देशों के प्रचार-प्रसार का डिप्लोमा कोर्स किया है।

करनैल सिंह उन हजारों लोगों में से सिर्फ एक है, जो देश में ईसाई धर्म के प्रचार और धर्मान्तरण को प्रेरित करने के लिए एक बिल्कुल नई रणनीति के तहत आगे लाये गये हैं। ये रणनीति क्या है?

यह रणनीति है... देश में हजारों की संख्या में छोटे-छोटे चर्च स्थापित करना जिसको चलाने के लिये किसी ईसाई धर्मगुरु की जरूरत नहीं है, उसे कोई भी व्यक्ति अपने बिजनेस की तरह चला सकता है। से चर्च स्वतंत्र चर्च है। किसी ईसाई मिशनरी से प्रमाण-पत्र की जरूरत नहीं है। बस आप किसी भी तरह धर्मान्तरण करवा सके। विशेषता यह है कि, इस व्यापार को शुरू करने के लिये आनको पैसे की कोई कमी नहीं होने दी जायेगी, आपको ब्याज मुक्त रकम दी जायेगी, जिसे आपको कभी लौटाना भी नहीं पड़ेगा। पूरे गांव में बिजली हो ना हो, आपको जनरेटर और डीजल दिया जायेगा। प्रचार-प्रसार के लिये गाड़ी दी जायेगी।

यहाँ यह जानना बहुत जरुरी है कि पैसा कहां से आ रहा है और कितना है। यह पैसा दस हजार करोड़ रुपये है जो हर साल लगातार विदेशों से आ रहा है। बहुत सारे हिन्दू संगठनों ने इसका बहुत विरोध किया, पर से विरोध नक्कार खाने में तूती की आवाज के बराबर है, एक बहुत बड़ा षड्यन्त्र हो रहा है। ईसाई धर्म के सर्वोच्च धर्मगुरु ने पहले ही घोषणा कर रखी है कि 21 सदी को वे ईसाई धर्म की सदी बनाना चाहते हैं। इसी योजना के अन्तर्गत यह सब हो रहा है।

करनैल सिंह के चर्च से सिर्फ एक किलोमीटर दूर पर एक दूसरे चर्च है, जिसका निर्माण पिछले साल दिसम्बर माह में ही हुआ है। इस चर्च के निर्माण के लिये अमरिका के टेक्सास स्थित Gospwl for Asia (GFA), सन्स्थान ने दान दिया। (GAF) ने इस तरह के कई चर्चों की स्थापना के लिये कुल 596 करोड़ रुपये का दान दिया है।

दिल्ली में इसी तरह अनेक विदेशी मिशनरी काम कर रही है। इस मिशनरी ने वर्ष 2009 दिल्ली के "महावीर इन्कलेव" के इलाके में इस तरह के अनेक स्वतन्त्र चर्चों का निर्माण किया। मात्र पंजाब या दिल्ली में ही नहीं यह षड्यन्त्र पूरे देश में हो रहा है। तमिलनाडू राज्य में साल 2002-03 के बीच कुल 775 करोड़ रुपये आये जो साल 2006-2007 तक 2,244 करोड़ रुपये तक पहुँच गये। आन्ध्र प्रदेश और केरल राज्यों से भी यही समाचार है।

-ओम गुप्ता
E-mail : omgupta@gmail.com

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥

विशाल भजन मण्डली एवं सत्संग

बांसवाड़ा भारतमाता मंदिर के 6 दिसम्बर के वार्षिक भजन-मण्डली कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के रतलाम, झाबुआ, गुजरात के गोधरा, दाहोद के अतिरिक्त अन्य 6 जिलों के भील बन्धुओं में साढ़े तेरह हजार पत्तल लगी। धर्मसभा में विश्व हिन्दु परिषद् के सयुंक्त महामंत्री श्री चम्पतराय जी ने लक्षित साम्प्रदायिक हिंसा विधेयक को हिन्दू के विरूद्ध षड्यंत्र कहा, संजेली धाम गुजरात के बापू दलसुख दास, दाहोद के नन्दु महाराज, कोकावद (झाबुआ) महादेव धाम के खुमसिंह जी एवं बांसवाड़ा लालीवाव मठ के हरिओम शरण दास जी एवं खैरेश्वर मठ के रोहित पुरी ने हिन्दूओं की घटती संख्या का देश-धर्म पर बहुत बड़ा संकट बताया एवं बांसवाड़ा बड़ा रामद्वारा कें रामप्रकाश जी व घोटि-अम्बाधाम कें हिरागिरी जी कें साथ क्षेत्र के बहुत संत उपस्थित थे। इस विशाल कार्यक्रम में धर्म के प्रति आस्था एवं आत्मानुशासन सें युक्त युवाओं की बड़ी संख्या में उपस्थिति उदाहरणीय दीखी। भारतमाता मन्दिर के रामस्वरूप जी महाराज के देश-धर्म, गाय, मठ एवं मन्दिर की रक्षा के लिए बालकों को गोद देने के आह्वान पर पांच बालक भारत माता मन्दिर को समर्पित कर धन के साथ व्यक्ति का समर्पण भी वागड़ क्षेत्र में विलक्षण उदाहरण बना। इस अवसर पर झाबुआ जिले के आठ एवं बांसवाड़ा के तीन बन्धुओं को देश-धर्म के लिए अधिक संतान पैदा करने पर सम्मानित किया गया। रात्रि भर भजन मण्डलीं चलती रहीं। गीता प्रेस गोरखपुर की साहित्य भी लोंगों ने पर्याप्त खरीदा। बांसवाड़ा भारत-मातामन्दिर के द्वारा संचालित विद्यालयों (522) के बालकों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में "कृष्ण-सुदामा एकांकी" की प्रस्तुति नें संतों व भक्तों की आंखों को द्रवित कर दिया। "हो जाओ तैयार साथियों" के गीत पर बालकों के हाथों में तलवार के साथ प्रस्तुति ने जोश भर दिया एवं "सबल राष्ट्र चाहिए, राम राष्ट्र चाहिए" गीत पर सैनिक संचलन मोहकमपुरा विद्यालय ने किया। सत्संग के अंत में, आने वाले समय में हिन्दुओं की संख्या बढ़े एवं हिन्दुओं का धर्मान्तरण नहीं हो और लक्षित हिंसा विधेयक के विरोध करने के संकल्प के साथ कार्यक्रम पूर्ण होने के बाद पूरी रात 125 टेन्टों में भजन मण्डली प्रात:-काल तक चलती रही एवं प्रात:-काल भारत-माता मन्दिर के आम्र-कुंज में परियोजना के 750 कार्यकत्ताओं को विश्व हिन्दु परिषद् के संयुक्त महामंत्री चम्पतराय जी ने शिक्षा और संस्कार देकर अच्छे नागरिक तैयार करने का आह्वान किया।

प्रेषक:-**रामस्वरूप महाराज**
(परियोजना प्रमुख)

❑

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥

भारत की भांति पाक में हिन्दुओं के रहने का अधिकार हो

-डॉ. कैलाश चन्द्र

सन् 1947 में हिन्दुस्थान स्वतंत्र होने से पूर्व अनेक वर्षों से मोहम्मद अली जिन्ना की मुस्लिम लीग हिन्दुस्थान का बंटवारा करके हिन्दुस्थान के मुसलमानों के लिए अलग स्वतंत्र मुस्लिम राष्ट्र की मांग कर रही थी। 16 अगस्त 1946 को जिन्ना साहब ने मुसलमानों को सीधी कार्यवाही (डायरेक्ट एक्शन) का आदेश दिया जिसका अर्थ यह था जहां-जहां सम्भव हो हिन्दुओं पर आक्रमण किया जाये, उनकी सम्पत्तियाँ लूटी जायें, हिन्दू लड़कियों को उठाया जाये, हिन्दुओं के घरों-मोहल्लों को आग लगा दी जाये और इस प्रकार से मुसलमानों के लिए अलग राष्ट्र बनाने के लिए उन्हें मजबूर कर दिया जाए। बंगाल में क्योंकि मुस्लिम लीग का शासन था इस कारण वहां के प्रधानमंत्री सोहराब वर्दी के ही इशारे से कलकत्ता में दस हजार हिन्दुओं की लाशें सड़कों पर बिछा दी गई, वहां बहू-बेटियों की इज्जत लूटी गई, हजारों-हजारों हिन्दू महिलाओं का अपहरण और सामूहिक बलात्कार हुआ और सचमुच जिन्ना साहब अपनी योजना में सफल हुए, कांग्रेस की सहमती से अंग्रेजों ने मजहब के आधार पर हिन्दुस्थान का बंटवारा स्वीकार कर लिया। मुस्लिम लीग के नेता जिन्ना तथा कई हिन्दू नेता चाहते थे कि देश का बंटवारा होने पर आबादी की अदला-बदली पूर्ण रूप से की जाये अर्थात् हिन्दुस्थान के जिन भागों को पाकिस्तान बनाया जाये वहां के सभी हिन्दू हिन्दुस्थान में आ जाये और शेष बचे हिन्दुस्थान के सभी मुसलमानों को पाकिस्तान भेज दिया जाये इस प्रकार सदा कि लिए हिन्दू मुस्लिम झगड़े का आधार ही समाप्त हो जाये। जिससे आशंका न बनी रहे कि हिन्दू राज्य में जो मुसलमान है वे हिन्दुओं द्वारा प्रताड़ित होंगे और मुस्लिम राज्य में जो हिन्दू हैं वे मुसलमानों द्वारा प्रताड़ित होंगे। किन्तु इस योजना में गांधी जी का मुस्लिम प्रेम आड़े आ गया वो अपने मुस्लिम भाईयों को पाकिस्तान जाने से रोकने लगे और उन्होंने पाकिस्तान में मुसलमानों का अत्याचार सहने वाले हिन्दुओं को उपदेश दिया कि चाहे वे अपने मुसलमान भाईयों के हाथों कत्ल कर दिये जायें तो भी उन्हें वहीं रहना चाहिए।

हिन्दुस्थान का बंटवारा होने पर ही वास्तव में देश स्वतंत्र हुआ जिसका सबसे अधिक मूल्य पाकिस्तान में रह गये हिन्दुओं को ही चुकाना पड़ा वे लगातार पाकिस्तानी अत्याचारों का शिकार बनने लगे। लाखों लोग मारे गये और करोड़ों अपने घर-बार, खेत-खलीहान छोड़कर अपनी जान बचाने के लिये भारत की ओर भागने पर विवश हो गये, पाकिस्तान में कुछ ऐसे भी रह गये जिनके पास कोई साधन न था और सिंध के थरपारकर जैसे जिलों में जहां हिन्दू प्रतिशत बहुत अधिक था बसे रह गये। वास्तव में हिन्दुस्थान का बंटवारा होने से पहले पाकिस्तान के हिन्दू-हिन्दूबहुल भारत के नागरिक थे और सबकी भांति वे भी हिन्दुस्थान के मालिक थे परन्तु भारत के बड़े नेताओं द्वारा बंटवारा स्वीकार करके उन्हें अपने ही देश में अवांछनीय तत्व बना दिया गया जो धर्मान्ध मुसलमानों की कृपा पर अपना जीवन व्यतीत करें। 15 अगस्त 1947 के पश्चात् भी कई दिनों तक नहीं कई वर्षों तक पाकिस्तान से प्रताड़ित हिन्दू भारत में आकर बसते रहे और उनको हिन्दुस्थान की नागरिकता प्राप्त करने की आवश्यकता भी नहीं थी जैसे भारत के पूर्व प्रधानमंत्री इन्द्र कुमार गुजराल, वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप नैयर और जस्टिस सच्चर जैसे लोग जिन्होंने पाकिस्तान में ही रहने का निश्चय किया और पाकिस्तान में ही अपना भविष्य मानते थे। आज भी हमारे देश के प्रधानमंत्री सहित और भी कितने ही बड़े-बड़े लोग है जो पाकिस्तान के काफी देर पश्चात् भारत में आये तथा इन्हें हिन्दुस्थान आने पर कभी यहां की नागरिकता प्राप्त करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी और बड़ी प्रसन्नता की की बात है कि ये लोग अब यहां सम्मानित जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

वास्तव में पाकिस्तान में बसे हिन्दुओं को हिन्दुस्थान में बसने का उतना ही अधिकार है जितना हिन्दुस्थान के हिन्दुओं का और हमें भूलना नहीं चाहिए कि इन पाकिस्तानी हिन्दुओं के भविष्य की बलि चढ़ाकर ही हमने स्वतंत्रा प्राप्त ाी है। परन्तु हिन्दू विरोधी हमारी केन्द्र सरकार जहां बंगलादेश (पूर्वी पाकिस्तान) के करोड़ो मुस्लिम घुषपैठियों को हर प्रकार की सुविधा देती है चाहे

शेष पृष्ठ 26 पर......

मन्दिर एवं उनकी सम्पत्ति का अधिग्रहण

-श्री जयदेव आर्य

स्वतंत्र भारत की सर्वप्रथम नेहरु सरकार ने 1951 में एक कानून 'द हिन्दू रिलीजस एंड चैरिटेबल ऐण्डोमैंट एक्ट' बनाया। इस कानून के द्वारा राज्य सरकारों को हिन्दुओं के मन्दिरों का अधिग्रहण कर उन पर और उनकी सम्पत्तियों पर पूर्ण अधिकार करने की अनुमति दी गई। इस कानून के अनुसार राज्य सरकारें मन्दिरों की चल अचल सम्पत्तियों को बेचकर उस धन का जैसे चाहें, वैसे उपयोग कर सकती हैं। ध्यान देने योग्य बात है कि यह कानून केवल हिन्दुओं के मन्दिरों के अधिग्रहण के लिये ही बनाया गया। मुस्लिम, ईसाई आदि अन्य धर्मावलम्बियों के पूजा स्थलों का अधिग्रहण कोई भी सरकार नहीं कर सकती।

यह आरोप किसी मन्दिर के अधिकारी ने नहीं लगाया है, बल्कि एक विदेशी लेखक स्टीफन कनाप्प (Stephen Knapp) ने अपनी पुस्तक "भारत के विरूद्ध अपराध और प्राचीन भारतीय संस्कृति को बचाने की आवश्यकता" (Crimes against India and the Need to Protect Vedic Tradition) में लगाया है। यह पुस्तक अमेरिका में प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में उपलब्ध जानकारी से लोगों का मन दु:ख, आक्रोश और क्रोध से भर उठता है।

उदाहरण के लिए देखें कि उपरोक्त कानून के अधीन आन्ध्र प्रदेश में लगभग 43 हजार मन्दिर सरकार के कब्जे में आ चुके हैं जबकि इन मन्दिरों से प्राप्त आय का केवल 18 प्रतिशत धन इन मन्दिरों के उद्देश्यों पर व्यय किया जाता है और शेष 82 प्रतिशत धन अन्य अघोषित कार्यों पर व्यय किया जाता है। इस विषय में विश्व प्रसिद्ध तिरुमाला मन्दिर को भी नहीं बख्शा गया है। कनाप्प के अनुसार इस मन्दिर में प्रतिवर्ष 3100 करोड़ रुपये से अधिक की राशि एकत्रित होती है और स्वयं राज्य सरकार ने इस आरोप से इन्कार नहीं किया है कि इसमें से 85 प्रतिशत राशि राज्यकोष में स्थानान्तरित कर दी जाती है, जिसका अधिकतर भाग ऐसे कार्यों में व्यय किया जाता है, जिनका हिन्दू समाज से कोई सम्बन्ध नहीं है। क्या ये कार्य ऐसे हैं, जिनके लिए भक्त लोग मन्दिरों में अपनी भेंट चढ़ाते है? एक दूसरा आरोप यह है कि आन्ध्र सरकार (जिसका मुख्यमंत्री पद सोनिया गाँधी ने ईसाइ मुख्यमंत्री को सौंपा था) ने एक गोल्फ कोर्स के निर्माण के लिए कम-से-कम दस मन्दिरों के ध्वंस की अनुमति दे दी थी। कनापप लिखते हैं कि कल्पना करें की यदि दस मस्जिदें गिरा दीं जातीं तो कैसी हायतौबा मचती?

यह देखा जा सकता है कि कर्नाटक में लगभग 2 लाख मन्दिरों से 79 करोड़ रुपये सरकार ने उगाहे थे, जिनमें से मन्दिरों के रखरखाव के लिए केवल सात करोड़ रुपये दिये गये तथा मुस्लिम मदरसों और हज-सहायता के लिए 59 करोड़ एवं चर्चों के लिए लगभग 13 करोड़ रुपये खर्च किये गये। कितनी उदार और सैक्यूलर है हमारी सरकार? कनाप्प लिखते हैं कि 2 लाख मन्दिरों में से 25 प्रतिशत अर्थात् लगभग 50 हजार मन्दिर धनाभाव के कारण बन्द हो जाएंगे। इसका एकमात्र कारण, जिससे सरकार अपनी लूट जारी रखे हुए है, यह है कि इसे रोकने के लिए हिन्दू जनता दृढ़तापूर्वक खड़ी नहीं हुई है।

इसके पश्चात् कनाप्प केरल की बात करते हैं, जहाँ गुरुवायूर मन्दिर के कोष से 45 हिन्दू मन्दिरों के सुधार हेतु धन देने से इंकार करके उसे वहाँ की सरकार राज्य की दूसरी योजनाओं में व्यय करती है। अयप्पा मन्दिर की बहुत सी भूमि हड़प ली गई है और सबरीमाला के निकट वनक्षेत्र की हजारों एकड़ भूमि पर चर्च द्वारा कब्जा कर लिया गया है।

एक आरोप यह भी है कि केरल की वामपंथी राज्य सरकार एक अध्यादेश द्वारा ट्रावनकोर और कोचीन के स्वायत्तशासी देवस्वम् बोर्डों (TCDBS) को समाप्त कर 1800 हिन्दू मन्दिरों की सीमित स्वतंत्र सत्ता का भी अपहरण करना चाहती है।

लेखक के अनुसार अब तो महाराष्ट्र सरकार भी राज्य के लगभग साढ़े चार लाख मन्दिरों का अधिग्रहण कर उनसे प्राप्त भारी धनराशि से अपने राज्य के दिवालियेपन की स्थिति सुधारना चाहती है।

उड़ीसा सरकार जगन्नाथ मन्दिर की सत्तर एकड़ से अधिक भूमि को बेचना चाहती है। इस पर राज्य सरकार यह बहाना बनाती है कि प्राप्त भारी धनराशि से वह उड़ीसा

के मन्दिरों की आर्थिक दुर्व्यवस्था को सुधार सकेगी जबकि इन मन्दिरों की आर्थिक दुरावस्था किसी और ने नहीं बल्कि स्वयं सरकार ने ही मन्दिरों की परिसम्पत्तियों के अपने कुप्रबन्धन द्वारा उत्पन्न की है।

कनाप्प कहते है कि जनता को इन सब बातों की प्रायः जानकारी ने होने का कारण यह है कि भारतीय संचार माध्यम और विशेषकर अंग्रेजी दूरदर्शन और प्रेस प्रायः हिन्दू विरोधी मानसिकता से ग्रस्त होने के कारण हिन्दू सूाज को दुष्प्रभावित करने वाली किसी भी बात को अधिक प्रसारित करने की प्रवृत्ति नहीं रखते, फिर सहानुभूति दिखाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इसीलिए सेक्यूलर सरकारों द्वारा हिन्दू समाज को हानि पहुँचाने वाली ऐसी कार्यवाहियाँ हिन्दू जनता का ध्यान आकर्षित किये बिना निर्बाध रुप से चलती रहती हैं।

कनाप्प कहते है कि स्वतंत्र और प्रजातांत्रिक दुनियां में कहीं भी कोई भी सरकार देश के लोगों की धार्मिक स्वतंत्रता का हनन करते हुए धार्मिक संस्थाओं का प्रबन्धन, नियमन और शोषण नहीं करती, परन्तु भारत में यहीं सब कुछ हो रहा है। सरकारी अधिकारियों ने मन्दिरों में धन की अधिकता को सूंघते हुए मन्दिरों पर कब्जे जमा लिये हैं। वे हिन्दुओं की उपेक्षावृत्ति, उनकी असीम सहनशीलता और धैर्य से सुपरिचित हैं। वे यह भी जानते हैं कि गलियों में प्रदर्शन करना, सम्पत्तियों को लूटना, नष्ट करना, हानि पहुँचाना और किसी को धमकाना, चोट पहुँचाना और हत्याएं करना हिन्दुओं के रक्त में नहीं है, इसीलिए वे निर्भय होकर मन्दिरों की सम्पत्तियाँ लूटते हैं।

लोग समझते हैं कि मोहम्मद गजनवी बहुत समय पहले मर चुका है, जबकि वास्तविकता यह है कि उसके द्वारा मन्दिरोंकी लूट अभी तक जारी है और वह भी पहले की अपेक्षा कहीं अधिक।

(सी.एन.एफ.)

......पृष्ठ 24 का शेष

ये लोग यहां अपराधिक और आतंकी कार्यों में लगे हुए हैं। किन्तु पाकिस्तान से आने वाले इन भारत भक्त हिन्दुओं के लिये वीजा तक देने से इंकार कर रही है। हिन्दुओं का सबसे बड़ा दोष यह है कि वे दुनिया भर के कल्याण की तो चिन्ता करते हैं किन्तु कश्मीर से प्रताड़ित हिन्दुओं के लिये कभी कुछ नहीं किया, नागालैंड, मिजोरम में हिन्दुओं पर क्या बीती इससे किसी को कुछ लेना देना नहीं यहां तक कि बंगाल के मुर्शीदाबाद तथा आसाम के ऐसे जिलों में जहां बंगलादेशी मुसलमान घुस आये हैं वहां के हिन्दुओं पर क्या बीत रही है इस बात पर किसी के कान पर जूं तक नहीं रेंगती। पाकिस्तान से प्रताड़ित होकर आये ये 27 हिन्दू शरणार्थी परिवार भारत माता की ओर आशा भरी दृष्टि से निहार रहे हैं वे भारत मां की गोद के लिये तरसते हैं। वास्तव में हिन्दू संस्थाओं का यह पुनीत कर्त्तव्य है कि अपने इन संकटग्रस्त भइयों की सहायता के लिए अपनी पूरी शक्ति लगाये। हमारा भारत सरकार से अनुरोध है कि इन शरणार्थी हिन्दुओं को ससम्मान हिन्दुस्थान में रहने की अनुमति दी जाये।

......पृष्ठ14 का शेष

तरफ मालेगांव मामले के मुस्लिम आरोपियों को जबरन उगलवाए (वापस लिए जा चुके) बयान के आधार पर जमानत दी जा रही है..... ऐसी स्थिति में शर्म की बात है कि हिन्दू होने के नाते मेरे कोई मानवाधिकार नहीं है। मेरे धर्म की वजह से मुझे यातनाएं दी गई।.... उन्होंने इशारा किया कि अगर मैंने उनके कहे पर चलने से मना किया तो हुगली से मेरी माँ को लाया जाएगा, उसके सामने निर्वस्त्र करके मुझे अपमानितकिया जाएगा।'

चिट्ठी के अनुसार, 'ये सब राजनीति और मेरे वापस लिए बयान को मुस्लिम आतंकवादियों को छोड़ने और हिन्दुओं को बेवजह फंसाने के हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है।.... मुझसे किया गया अमानवीय बर्ताव हमारे लोकतंत्र के लिए शर्मनाक है।.... मुझे पीड़ित किया जा रहा है क्योंकि मैं हिन्दू हूँ। मानवाधिकार आयोग को इस सबकी जाँच करनी चाहिए।'

स्वामी असीमानंद की सच की परतें खोलती इस चिट्ठी पर केन्द्र की संप्रग सरकार क्या कार्रवाई करेगी, यह देखना बाकी है।

प्रेषक - डॉ. कैलाश चन्द्र
डी-107, आनन्द निकतेन, नई दिल्ली-110021
मो.नं. : 9899176787